खंड 5
संस्कृति, स्व एवं सामाजिक व्यवहार

खंड 5 संस्कृति, स्व एवं सामाजिक व्यवहार

परिचय

यह खंड पाठ्यक्रम का अंतिम खंड है तथा इसमें केवल एक इकाई है। ये इकाई संस्कृति के सम्प्रत्यय एवं इसके व्यक्ति के व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों से है। संस्कृति इस बात का महत्त्वपूर्ण निर्धारक है कि कैसे हमारा प्रत्यक्षण, अभिवृत्ति, एवं व्यवहार हमारे जीवन में आकर लेता है एवं रूपांतरित होता है। लोग अपने समाज परिवार में जिस तरह से बांड एवं सम्बन्ध बनाते है उसके प्रकार तथा प्रकृति भी उनके लिए अनोखी होती है। हम प्रायः समाज में इस तरह के अंतरों का गुनारोपण उनकी संस्कृति में भिन्नता पर करते हैं। इस इकाई में आपको संस्कृति के सम्प्रत्य एनकल्चरेशन एवं अकल्चरेशन की प्रक्रिया के साथ ही साथ व्यक्तिवादी तथा सामूहिक समाजों के बारे में पता चलेगा। इस इकाई के अंत में आपको व्यक्तियों के प्रत्यक्षण एवं कार्यों पर सांस्कृतिक प्रभावों का भी पता चलेगा।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 10 संस्कृति एवं स्व सामाजिक व्यवहार*

संरचना

10.0 उद्देश्य

10.1 परिचय

10.2 संस्कृतिः अर्थ एवं परिभाषा

10.3 एनकल्चरेशन एवं अकल्चरेशन

- 10.3.1 एनकल्चरेशन एवं अकल्चरेशन में अंतर
- 10.3.2 एनकल्चरेशन के अभिकर्ता
  - 10.3.2.1 माता-पिता और बहन-भाई
  - 10.3.2.2 विस्तारित परिवार
  - 10.3.2.3 साथी-सम्बन्ध
  - 10.3.2.4 शिक्षा
  - 10.3.2.5 धर्म

10.4 विभिन्न संस्कृतियों में स्व

- 10.4.1 संस्कृतियों में विभिन्न सेल्फ कन्स्ट्रुअल का परिणाम
- 10.4.2 बहुलसांस्कृतिक पहचान का मामला
  - 10.4.2.1 अंतरा-वैयक्तिक स्तर पर
  - 10.4.2.2 अंतर्वैयक्तिक स्तर पर
  - 10.4.2.3 सामूहिक पर

10.5 विभिन्न संस्कृतियों में सामाजिक व्यवहार

- 10.5.1 समूह सदस्यता की गतिशीलता में अंतःसांस्कृतिक विभेद
- 10.5.2 अन्तःसमूह तादात्मीकरण बनाम अन्तःसमूह पक्षपात
- 10.5.3 गुणारोपण
- 10.5.4 आक्रामकता
- 10.5.5 व्यक्ति प्रत्यक्षण, आकर्षण, एवं सम्बन्ध

10.6 सारांश

10.7 शब्दावली

10.9 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

10.10 सुझाये गये पाठन एवं संदर्भ

10.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात, आप यह कर सकने में सक्षम हो सकेंगेः

- संस्कृति को परिभाषित और वर्णन करना;
- अपमान और आरोपण के बीच अंतर स्पष्ट करना;
- ऐसे एजेंटों को समझना जो अपने समाज के व्यक्ति के अपमान को प्रभावित करते हैं;
- व्यक्तिवादी और सामूहिक समाजों के बीच अंतर करना;

*डॉ. अरी सूदन तिवारी

- ठन-ग्रुप पहचान, बहुसांस्कृतिक पहचान और इंटरग्रुप पूर्वाग्रह को समझना;
- समझाएं कि समूह सदस्यता की गतिशीलता संस्कृतियों में कैसे भिन्न होती है; तथा
- आक्रामकता, गुणारोपण, आकर्षण, व्यक्ति की धारणा और रिश्तों पर सांस्कृतिक प्रभाव पर चर्चा करना।

10.1 परिचय

जब भी हम किसी दूसरे देश की यात्रा करते हैं, तो हम उस देश के लोगों के जीवन और जीवन शैली के बीच कई अंतर पाते हैं। उस देश के लोग ऐसी भाषा बोलते हैं जो हमसे अलग है। वे ऐसे खाद्य पदार्थ खाते हैं जिन्हें हम आम तौर पर नहीं खाते हैं। वे भिन्न तरीकों से खुशी और दुख व्यक्त करते हैं जो हमारे लिए समान नहीं हैं। बांड और संबंधों का प्रकार और प्रकृति जो वे अपने समाजों और परिवारों में बनाते हैं, वे भी उनके लिए अद्वितीय होते हैं।

हम अक्सर समाजों में इस तरह के मतभेदों को अपनी संस्कृतियों में अंतर को जिम्मेदार मानते हैं। इस इकाई में, आपको संस्कृति की अवधारणा, एनकल्चरेशन एवं अकल्चरेशन की प्रक्रिया के साथ-साथ व्यक्तिवादी और सामूहिक समाजों के बारे में पता चलेगा। इकाई के अंत तक, आपको व्यक्तियों के प्रत्यक्षण और कार्यों पर सांस्कृतिक प्रभावों के बारे में भी पता चल जाएगा।

10.2 संस्कृतिः अर्थ और परिभाषा

संस्कृति शब्द का उपयोग आम तौर पर सामान्य भाषा में जाति, राष्ट्रीयता, जातीयता आदि के साथ किया जाता है। संस्कृति शब्द का उपयोग संगीत, नृत्य, कला, भोजन, वस्त्र, अनुष्ठान, परंपराओं और एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र की बड़ी विरासत को इंगित करने के लिए भी किया जाता है। संस्कृति भी कई विषयों, जैसे समाजशास्त्र, नृविज्ञान, राजनीति विज्ञान, शिक्षा, विपणन और, निश्चित रूप से, मनोविज्ञान में अध्ययन का एक बहुत ही आवश्यक क्षेत्र रहा है। ये सभी विषय संस्कृति को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखते हैं। इन सभी दृष्टिकोणों की समीक्षा करने के बाद, बेरी, पोर्टिंगा, सेगल, और डेसेन (1992) ने छह व्यापक दृष्टिकोणों का सुझाव दिया जिसमें संस्कृति को समझा जाता है। (

संस्कृति का वर्णनात्मक परिप्रेक्ष्य किसी संस्कृति से जुड़ी गतिविधियों या व्यवहारों के स्पेक्ट्रम पर जोर देता है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण लोगों की एक समूह से जुड़ी विरासत और परंपराओं को समझने में मदद करता है। सामान्य दृष्टिकोण, संस्कृति विशिष्ट नियमों और मानदंडों का वर्णन करता है। संस्कृति की मनोवैज्ञानिक व्याख्या सीखने, समस्या को हल करने और संस्कृति से जुड़े अन्य व्यवहारिक दृष्टिकोणों पर जोर देती है। संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य, किसी संस्कृति के सामाजिक या संगठनात्मक तत्वों पर प्रकाश डालता है। और अंत में, अनुवांशिक दृष्टिकोण संस्कृति की उत्पत्ति पर चर्चा करता है।

इस प्रकार, संस्कृति एक जटिल अवधारणा है जो हमें हमारे जीवन में विभिन्न गतिविधियों, व्यवहारों, घटनाओं, संरचनाओं आदि को समझने में मदद करती है। इसकी जटिलता को दर्शाते हुए, विभिन्न शोधकर्ताओं ने संस्कृति को विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया है। इनमें से कुछ प्रतिनिधि परिभाषाएँ नीचे दी गई हैं:

रोहनर (1984): संस्कृति मानव जनसंख्या द्वारा बनाए गए समतुल्य और पूरक सीखे गए अर्थों की समग्रता है, या एक आबादी के पहचान योग्य क्षेत्रों द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में प्रेषित होती है।

ट्रायंडिस (1972): संस्कृति में कुछ वस्तुनिष्ठ पहलू शामिल हैं, जैसे उपकरण, और कुछ व्यक्तिपरक पहलू, जैसे शब्द, साझा विश्वास, दृष्टिकोण, मानदंड, भूमिका और मूल्य।

जहोदा (1984): संस्कृति एक वर्णनात्मक शब्द है जो न केवल नियम और अर्थ बल्कि व्यवहार को भी दर्शाता है।

मात्सुमोतो और जुआंग (2008): संस्कृति स्पष्ट और निहित नियमों की एक गतिशील प्रणाली है, जो उनके अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए समूहों द्वारा स्थापित किया गया है, जिसमें एक समूह द्वारा साझा किया गया दृष्टिकोण, मूल्य, विश्वास, मानदंड और व्यवहार शामिल हैं, लेकिन प्रत्येक विशिष्ट इकाई द्वारा अलग तरह से नुकसान पहुंचाया गया है जिसे कई पीढ़ियों में संचारित किया गया है जो की अपेक्षाकृत स्थिर लेकिन समय के साथ बदलने की क्षमता रखता हैं।

इन परिभाषाओं को देखने के बाद, यह प्रतीत होता है कि मात्सुमोतो और जुआंग (2008) ने अन्य परिभाषाओं की सभी आवश्यक विशेषताओं को शामिल करके संस्कृति को बहुत व्यापक अर्थों में समझाया है। परिभाषा संस्कृति के निम्नलिखित घटकों का वर्णन करती है:

- **गतिशील प्रकृति:** संस्कृति एक गतिशील प्रणाली है जो किसी आबादी में औसत, मुख्यधारा और प्रतिनिधि प्रवृत्तियों का वर्णन करती है। संस्कृति को किसी दिए गए संस्कृति में सभी व्यक्तियों के सभी व्यवहारों के लिए एक निश्चित दिशानिर्देश के रूप में नहीं लिया जा सकता है। एक व्यक्ति के विभिन्न व्यवहारों और विभिन्न व्यक्तियों और संस्कृति के व्यवहारों के बीच हमेशा एक निश्चित मात्रा में विचलन होता है। यह असंगति संस्कृति के भीतर एक गतिशील तनाव की ओर ले जाती है और इसलिए, संस्कृति को स्थैतिक के रूप में नहीं समझा जा सकता है। हालाँकि, संस्कृति की मात्रा अलग-अलग संस्कृतियों में भिन्न हो सकती है, जिसके परिणामस्वरूप कुछ संस्कृतियों को तनाव की मात्रा में उच्च माना जाता है, जबकि अन्य में तनाव की कम मात्रा हो सकती है।

- **नियमों की प्रणाली:** एक संस्कृति में विभिन्न व्यवहार, नियम, दृष्टिकोण या मूल्य अलगाव में मौजूद नहीं हैं। इसके बजाय, संस्कृति एक ऐसी प्रणाली को संदर्भित करती है जिसमें ऐसे स्पष्ट रूप से असंबंधित लेकिन कार्यात्मक रूप से परस्पर संबंधित मनोवैज्ञानिक घटकों का एक नक्षत्र शामिल होता है।

- **समूह और इकाइयाँ:** अलग-अलग स्तर हैं जिन पर संस्कृति परिलक्षित होती है। जब हम इसे समूहों के भीतर व्यक्तियों के परिप्रेक्ष्य में लेते हैं, तो संस्कृति को प्रतिबिंबित करने वाली इकाइयाँ समूह के भीतर विशिष्ट व्यक्ति होती हैं। हालांकि, एक बड़े समूह के लिए जिसमें कई छोटे समूह शामिल हैं, विभिन्न खंड संस्कृति को प्रतिबिंबित करने वाली विशिष्ट इकाइयाँ हैं।

- **समूह का अस्तित्व सुनिश्चित करना :** संस्कृति में मौजूद नियमों की प्रणाली व्यवहार पर एक बाधा के रूप में कार्य करती है। नियमों की अनुपस्थिति से अराजकता की स्थिति पैदा हो सकती है। ये नियम सामाजिक व्यवस्था के लिए एक संरचना की पेशकश और प्रचार करके समूह के भीतर छोटी इकाइयों को एक-दूसरे के साथ सहयोग करने में मदद करते हैं। नियम बड़े सामाजिक संदर्भ और उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखकर समूहों और इकाइयों की जरूरतों और इच्छाओं के बीच संतुलन को बढ़ावा देते हैं।

- **मनोवैज्ञानिक और व्यवहार संबंधी घटक** : उद्देश्य और मूर्त घटकों (संगीत, नृत्य, कला, भोजन, कपड़े, आदि) के अलावा, संस्कृति का गठन संस्कृति में रहने वाले व्यक्तियों के मन और मानस की सामग्री द्वारा भी किया जाता है। संस्कृति के ऐसे व्यक्तिपरक और गैर-भौतिक घटकों में दृष्टिकोण, मूल्य, विश्वास, विचार, मानदंड, व्यवहार आदि शामिल हैं। ये घटक संस्कृति में साझा किए जाते हैं और स्वैच्छिक व्यवहार, सदस्यों की स्वचालित प्रतिक्रियाओं और आदतों, और समग्र रूप से, अनुष्ठानों में व्यक्त किए जाते हैं।

- **व्यक्तिगत अंतर** : किसी विशेष संस्कृति में अलग-अलग व्यक्ति सांस्कृतिक मूल्यों, दृष्टिकोण, मान्यताओं, मानदंडों, व्यवहारों आदि को लेने और उनके पालन करने की मात्रा में भिन्न होते हैं। इसलिए, किसी भी संस्कृति में सांस्कृतिक मूल्यों, दृष्टिकोण, विश्वास के पालन में अलग-अलग अंतर होते हैं। मानक और व्यवहार या संस्कृति के अनुरूप। हालाँकि, कुछ ढीले समाज या संस्कृतियाँ अपने सदस्यों को संस्कृति के साथ अधिक असहमति की अनुमति देती हैं, जबकि कुछ तंग समाज या संस्कृतियाँ हैं जो संस्कृति में बड़े पैमाने पर अंतर करती हैं या पहचान नहीं पाती हैं (पेल्टो, 1968)।

- **एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संप्रेषित** : संस्कृति एक फैशन प्रवृत्ति नहीं है जो कुछ लोगों द्वारा कुछ समय के लिए अस्थायी रूप से पालन और अभ्यास किया जाता है और जो समय के साथ गायब हो जाता है। बल्कि संस्कृति, जिसमें नियमों की प्रणाली के मुख्य पहलू शामिल हैं, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रेषित होती है और इसलिए, यह समय के साथ अपेक्षाकृत स्थिर रहती है।

- **समय के साथ अपरिहार्य परिवर्तन** : हालांकि संस्कृति को समय के साथ अपेक्षाकृत स्थिर माना जाता है, यह अपरिहार्य परिवर्तनों की कुछ मात्रा से भी गुजरता है। उदाहरण के लिए, पिछले 30 वर्षों में भारतीय संस्कृति में तकनीकी प्रगति के कारण आमूल-चूल परिवर्तन हुए हैं। संस्कृति एक जटिल प्रणाली है जिसमें इसके परस्पर संबंधित घटक और इकाइयाँ शामिल होती हैं, और इसके किसी भी घटक और इकाइयों में परिवर्तन एक प्रणाली के रूप में समग्र संस्कृति में परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करता है।

10.3 एनकल्चरेशन एवं अकल्चरेशन

हम विभिन्न संस्कृतियों के लोगों में उनके मूल्यों, दृष्टिकोण, मान्यताओं, मानदंडों, व्यवहार, संगीत, नृत्य, कला, भोजन और कपड़ों के संदर्भ में कई अंतरों को देखते हैं। इस तरह के मतभेदों का कारण समाजीकरण की प्रक्रिया में है जो वे अपनी अलग संस्कृतियों में गुजरते हैं। संस्कृति की कई एजेंसियां हैं, जैसे कि माता-पिता, सहकर्मी, शैक्षणिक संस्थान, धार्मिक संस्थान आदि, जो हमारी अपनी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को सीखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिन प्रक्रियाओं से हम किसी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को सीखते हैं, प्राप्त करते हैं और अपनाते हैं एनकल्चरेशन एवं अकल्चरेशन कहते हैं। एनकलचरेशन का अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा हमारी अपनी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को संस्कृति के विभिन्न एजेंसियों द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रेषित किया जाता है।

10.3.1 एनकल्चरेशन एवं अकल्चरेशन में अंतर

अकल्चरेशन से एनकल्चरेशन थोड़ा अलग है। अकल्चरेशन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति ऐसी संस्कृति को अपनाता है जो कई मामलों में उसकी मूल रूप से भिन्न होती है। इस प्रकार, एनकल्चरेशन वहां होता है जहां हम पैदा हुए होते हैं और संस्कृति के

परिचित होने की प्रक्रिया जन्म के ठीक बाद शुरू होती है। हालाँकि, अकल्चरेशन के मामले में हमारे स्वयं के अलावा अन्य संस्कृति का प्रभाव तभी शुरू होता है जब हम दूसरी संस्कृति में चले जाते हैं। इसके अलावा, एनकल्चरेशन सहज है और काफी हद तक एक अनैच्छिक, स्वचालित और अपरिहार्य प्रक्रिया है। लेकिन अकल्चरेशन की प्रक्रिया अक्सर मौजूदा सांस्कृतिक शिक्षा और नई सांस्कृतिक प्रथाओं और व्यक्ति के संपर्क में आने के बीच अंतर्द्वंद का सामना करती है।

10.3.2 एनकल्चरेशन के अभिकर्ता

जैसा कि माना जाता है, संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रसारित होती है। संस्कृति के विभिन्न घटकों की यह संचरण प्रक्रिया संस्कृति के विभिन्न एजेंटों, जैसे कि माता-पिता और बुनियादी परिवार, साथियों, शैक्षणिक संस्थानों, धार्मिक संस्थानों आदि द्वारा संचालित और सुसाध्य होता है।

10.3.2.1 माता-पिता और भाई-बहन

एक शिशु के व्यक्तित्व और उसके अन्य मनोवैज्ञानिक मेकअप पर सबसे पहले पर्यावरणीय प्रभाव माता-पिता से आता है। लेविन (1977) द्वारा तीन पैतृत्व लक्ष्यों का एक पदानुक्रम प्रस्तुत किया गया था जिसमें शामिल हैं:

i) संतान की शारीरिक उत्तरजीविता

ii) आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने वाले व्यवहार को बढ़ावा देना

iii) नैतिकता सहित अन्य सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देना।

माता-पिता की आर्थिक प्रतिष्ठा (समान समाज में भी) पैतृत्व लक्ष्य के स्तर का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है जिस पर वे ध्यान दे सकते हैं। संस्कृतियों में पालन-पोषण के व्यवहार में समानता और अंतर की जांच करने के लिए पिछले कुछ दशकों में कई तरह के अंतर-सांस्कृतिक अध्ययन किए गए हैं। विकास संबंधी अपेक्षाओं (सोलिस.केमरा और फॉक्स, 1995), एक अनुशासनात्मक माप के रूप में प्राधिकरण के उपयोग (पप्स, वाकर, ट्रंबोली, और ट्रंबोली, 1995) और उच्च शक्ति (मैकवे, ली.ओ नील, ग्रोइसमैन, रॉबर्ट्स.बुटेलमन, डींगरा, पोर्डेर) पर जोर देने के संदर्भ में समानताएं पाई गई हैं।

पेरेंटिंग में अंतःसांस्कृतिक अंतर से संबंधित अध्ययनों से संकेत मिलता है कि ये अंतर माता-पिता के लक्ष्यों के सार की विशिष्टताओं से संबंधित हैं। इन अध्ययनों ने यह भी जांच की है कि एक हद तक विभिन्न पेरेंटिंग शैलियों में विभिन्न मनोवैज्ञानिक निर्माणों पर सांस्कृतिक अंतर होता है। इस तरह के एक अध्ययन (कॉनरॉय, हेस, अजूमा, और काशिवगी, 1980) में छोटे बच्चों से अनुपालन प्राप्त करने के लिए जापानी और अमेरिकी माताओं द्वारा नियोजित रणनीतियों की जांच की। अध्ययन के निष्कर्षों ने संकेत दिया कि अनुपालन प्राप्त करने के लिए जापानी माताओं को काफी हद तक व्यक्तिगत और पारस्परिक संबंधों पर निर्भर थे, जबकि अमेरिकी माताओं को पुरस्कार और दंड देने की दिशा में अधिक उन्मुख थे। जापानी माताओं को भावनात्मक अपील में शामिल होने की अधिक इच्छा थी और उन्होंने अमेरिकी माताओं की तुलना में अधिक लचीलापन प्रदर्शित किया, जिन्होंने माताओं के रूप में अपने अधिकार के आधार पर रणनीति बनाई। पेरेंटिंग पर इस तरह के अंतर स्पष्ट रूप से एनकल्चरेशन और समाजीकरण के पैटर्न में व्यापक सांस्कृतिक अंतर को दर्शाते हैं।

सांस्कृतिक अंतर माता-पिता के रूप में उनकी भूमिकाओं के बारे में विश्वासों द्वारा उनकी भागीदारी के प्रकार को प्रभावित कर सकते हैं। लेविन एवं सहयोगियों (1996) ने अमेरिकी माताओं (बोस्टन उपनगर) द्वारा सहभागिता और सक्रिय भागीदारी पर जोर दिया गया, और केन्याई माताओं (गुसी क्षेत्र की) द्वारा बाल-सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया। यह अंतर पेरेंटिंग और एनकल्चरेशन के कथित लक्ष्यों में अंतर के परिणामस्वरूप माना जाता है।

बॉम्रिंड (1971) और मैककोबी और मार्टिन (1983) द्वारा शुरू किया गया लोकप्रिय मॉडल चार पालन शैली का वर्णन करता है :

i) अधिनायकवादी शैली (गर्मजोशी में कम, नियंत्रण में उच्च)

ii) अनुनयन शैली (उच्च गर्मजोशी, नियंत्रण में कम)

iii) आधिकारिक शैली (गर्मजोशी और नियंत्रण में उच्च) और

iv) लापरवाह शैली (गर्मजोशी और नियंत्रण में उच्च)

इनमें से, आधिकारिक पेरेंटिंग को अक्सर बच्चे के इष्टतम विकास के लिए सबसे अच्छी शैली के रूप में मान्यता दी गई है (बॉम्रिंड, 1967)। हालाँकि, जिस मॉडल को यूरोपीय अमेरिकी प्रतिभागियों के आधार पर वर्गीकृत किया गया है, वह अन्य संस्कृतियों में दृढ़ता से नहीं टिक सकता है। शियाओ शुन (या प्रशिक्षण) की चीनी अवधारणा पेरेंटिंग की एक विशिष्ट शैली है जो विशेष रूप से संस्कृति में माता.पिता के बच्चे के रिश्ते और बच्चों के परिणामों पर लागू होती है (चाओ, 1994)। स्टीवर्ट और सहकर्मियों (1999) ने पाकिस्तानी पेरेंटिंग को कम गर्म एशियाई देशों की पेरेंटिंग शैलियों पर पारंपरिक अध्ययन से विभेदित किया है, यह सुझाव देते हुए कि पूर्व गोलार्ध के देश आमतौर पर अधिक गर्म है। यह अलग-अलग अर्थों का भी परिणाम हो सकता है कि सभी संस्कृतियों में पेरेंटिंग शैली के घटक होते हैं। इसी तर्ज पर, एक संस्कृति में नियंत्रण का नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है जबकि दूसरी संस्कृति के बच्चे इसे सकारात्मक रूप से देख सकते हैं। हालाँकि, अकल्चरेशन इन अर्थों को परिवर्तित कर सकता है। उदाहरण के लिए, जब कोरियाई बच्चे कनाडा और अमेरिका जैसे देशों में प्रवास करते हैं, तो माता-पिता के नियंत्रण को नकारात्मक रूप से महसूस करते हैं (किम, 1992), हालांकि कोरिया में रहने वाले लोग इसी चीज को सकारात्मक देखते हैं (रोहनर और पेटेनफिल, 1985)।

बच्चों की मातृ अपेक्षाओं (जोशी और मैकलेन, 1997) पर किए गए अध्ययन से पता चला है कि भारतीय माताओं को आमतौर पर जापानी और ब्रिटिश माताओं की तुलना में अपने बच्चों के विकास संबंधी डोमेन (पर्यावरण की स्वतंत्रता के लिए उम्मीद) की उम्मीद कम थी। जापानी माताओं ने ब्रिटिश माताओं की तुलना में अपने बच्चों की उच्च शैक्षिक, आत्म-देखभाल और पर्यावरण स्वतंत्रता की अपेक्षाओं का प्रदर्शन किया। एशियाई भारतीय मूल के अप्रवासी माता-पिता अंशकालिक नौकरियों में अपने बच्चों को शामिल करने से बचते हैं क्योंकि वे उन्हें एक अच्छी शिक्षा से विचलित मानते हैं, इस प्रकार उन व्यवहारों को लागू करते हैं जो उनके बच्चों की बेहतर शिक्षा के लिए आवश्यक हैं (हिक्की, 2006)।

नींद की व्यवस्था में अंतर संस्कृतियों में पालन-पोषण के व्यवहार के अंतर को भी उजागर करता है। मात्सुमोतो और जुआंग (2008) बच्चों के साथ सोने के बारे में कई अमेरिकी माता-पिता के नकारात्मक रवैये के बारे में लिखते हैं; यह बच्चों के लिए परिवारों में अलग-अलग कमरे में रखने की प्रवृत्ति है जो आर्थिक रूप से स्थिर हैं। भारतीय माता.पिता, और समान संस्कृतियों वाले लोग, अक्सर इस प्रथा से प्रभावित होते हैं क्योंकि यह उपेक्षित प्रतीत होता है। वे ''नींद प्रशिक्षण'' पर साथ सोना पसंद करते हैं, खासकर शैशवावस्था के दौरान, ताकि एक मजबूत मातृ-शिशु संबंध (इसहाक, एनी एवं प्रशांत, 2014) का निर्माण किया जा

सके। दिलचस्प बात यह है कि पूर्व-औद्योगिक यूरोप और अमेरिका (ब्रौन, 2017) में साथ-साथ सोना आम बात थी। इसलिए, एक संस्कृति के भीतर पेरेंटिंग के प्रत्यक्षित लक्ष्य एवं उन्हें प्राप्त करने का विचार समय के साथ बदल सकता है।

एनकल्चरेशन और समाजीकरण के लिए जिम्मेदार तात्कालिक परिवार में उनके भाई-बहन भी शामिल हैं। भाई-बहनों के बीच परस्पर समाजीकरण की प्रक्रिया पर अनुसंधान में जोर दिया जाता है (अर्नस्ट एंड एंगस्ट, 1983)। भाई-बहन अक्सर अपने विश्वासों और व्यवहारों के सेट पर एक-दूसरे के पास जाते हैं (जुको-गोल्ड्रिंग, 1995)। बड़ी संख्या में बच्चों वाले परिवारों में, बड़े भाई-बहन अपने छोटे भाइयों और बहनों की देखभाल करने की जिम्मेदारी उठा सकते हैं (मात्सुमोतो और जुआंग, 2008)।

बच्चों की वृद्धि में भाई-बहनों की संख्या का प्रभाव के बारे में मिश्रित परिणाम प्रकट हुआ (सलेम, 2006)। भाई-बहनों की संख्या बढ़ने से पोषण संबंधी समस्या की संभावना बढ़ गई। इसी समय, बड़े भाई-बहन अपने छोटे भाइयों और बहनों के स्टंट के खिलाफ सुरक्षात्मक कारकों के रूप में कार्य करते हैं। हालांकि, देसाई (1995) के एक अध्ययन के अनुसार, अगर उनके दूरदराज के गांव में स्कूल नहीं होता तो छोटे भाई-बहनों को कोई फायदा नहीं होता। यह इस बिंदु पर प्रकाश डालता है कि एनकल्चरेशन एजेंट स्वतंत्र रूप से काम नहीं करते हैं और कभी-कभी केवल समाजीकरण को प्रभावित करने वाले कारकों पर बेहतर प्रभाव पड़ता है। भारत में सड़क पर रहने वाले बच्चों (ज्यादातर हिंदू और मुसलमानों) का समाजीकरण से सम्बंधित लेख इंगित करता है कि उनका कामकाजी जीवन सुविधा प्राप्त लोगों की तुलना में बहुत कम उम्र में 6 से 9 वर्ष की उम्र के आसपास शुरू होता है (माथुर, 2009)। इस श्रेणी में छोटे बच्चे अक्सर अपने बड़े भाई-बहनों के साथ होते हैं, इस प्रकार यह अपमान के महत्वपूर्ण कारक होते हैं।

10.3.2.2 विस्तृत परिवार

बच्चे को विकसित करने में पूरे गांव का योगदान होता है। या कई गैर-यूरोपीय अमेरिकी संस्कृतियों में, यह काम कम से कम एक बड़ा परिवार लेता है जिसमें माता-पिता और उनके बच्चों से अधिक लोग होते हैं। कर्वे (1965) ने एक संयुक्त परिवार का वर्णन किया है, ''आम तौर पर एक छत के नीचे रहने वाले लोगों का एक समूह, जो एक ही रसोई में पका हुआ भोजन खाते हैं, जो आम संपत्ति रखते हैं और सामान्य पारिवारिक पूजा-पाठ में भाग लेते हैं और परस्पर एक दूसरे से संबंधित होते हैं विशेष किस्म के दयालु होते हैं। दयालु इस व्यापक परिभाषा में एक महत्वपूर्ण शब्द है। कई संस्कृतिया, विस्तारित परिवार को सांस्कृतिक विरासत के रूप में बाद की पीढ़ियों को स्थानांतरित करती हैं (मात्सुमोतो और जुआंग, 2008)।

अधिकांश पश्चिमी अध्ययन, विशेष रूप से पेरेंटिंग शैलियों पर, एकांकी परिवार और अक्सर अपनी मां के साथ बच्चे के रिश्ते पर ध्यान केंद्रित करते हैं। संयुक्त परिवार, दादा-दादी, चाचा, चाची और चचेरे भाइयों के साथ महत्वपूर्ण संबंध गतिशीलता जितना कि माता-पिता और भाई-बहनों के साथ होता है का प्रदर्शन करते हैं। अमेरिका में भी, दादी अक्सर परिवार में तब ज्यादा जुड़ जाती हैं जब उनकी बेटियां एकल मां या किशोर मां होती हैं (गार्सिया कोल, 1990)।

संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे पश्चिमी देशों में आप्रवासन के बाद भी अकल्चरेशन और पारिवारिक एकांकीकरण की प्रक्रिया के बाद, एशियाई भारतीय अमेरिकी संयुक्त परिवार के मूल्यों और शिष्टाचार को बनाए रखते हैं (हिकी, 2006)। संयुक्त परिवार में पलने-बढ़ने से

बच्चों में अपनेपन की भावना पैदा होती है (उनके पास प्रचुर मात्रा में खेलने वाले होते हैं और आवश्यकता पड़ने पर प्रेम और गर्मजोशी प्रदान करते हैं (घोष, 1983)। यह बदले में, परिवार के प्रति वफादारी और एशियाई भारतीय बच्चों में प्राधिकार के लिए सम्मान को मजबूत करता है।

10.3.2.3 साथी समूह के मध्य संबंध

साथी समूह में ऐसे व्यक्तियों का एक छोटा समूह शामिल होता है, जो मित्रों के समान घनिष्ठ होते हैं, समान आयु वर्ग के होते हैं, और सामूहिक रूप से समान गतिविधियों में संलग्न होते हैं (कास्त्रोगोवेनी, 2002)। बचपन से ही, बच्चे अपनी उम्र के अन्य लोगों के साथ अंतर्क्रिया करते हैं जो उनके संभावित खिलाड़ी हो सकते हैं। अनाथालयों में, बच्चे ज्यादातर कई आयु वर्ग के साथियों के साथ बातचीत करते हैं, जहां बड़े बच्चे छोटे बच्चों की जिम्मेदारी लेते हैं। साथियों के साथ बातचीत की सीमा संस्कृति से संस्कृति में भिन्न हो सकती है; पश्चिमी और औद्योगिक संस्कृतियों ने अपने पूर्वी समकक्षों की तुलना में साथियों के भीतर अधिक सहभागिता देखी। यह सीमा व्यक्तियों के समाजीकरण के लिए सहकर्मी बातचीत के महत्व स्तर को निर्धारित करती है। साथी समूहव्यक्ति को वयस्क भागीदारी के बिना स्वायत्तता सीखने की अनुमति देते हैं, मुकाबला करने की रणनीतियाँ (कास्त्रोगोवान्नी, 2002), और पहचान-निर्माण / पुनर्निर्माण (काला, 2002) सीखते हैं। निकोल एम हॉवर्ड (2004) के अनुसार, साथी समूह पारिवारिक मूल्यों को सुदृढ़ कर सकते हैं लेकिन समस्याग्रस्त व्यवहारों को भी पूरक कर सकते हैं।

बच्चे अक्सर सामान लिंग के लोगों के साथ बातचीत करते हैं, दूसरे लिंग से डिस्कनेक्ट करते हैं। यह बाद में किशोरावस्था और वयस्कता में भी दिख सकता आगे है क्योंकि इन व्यक्तियों को अपने स्वयं के लिंग के सदस्यों के साथ बातचीत करने में कौशल विकसित करने और विपरीत सेक्स संबंधों के लिए पर्याप्त कौशल नहीं है (हनीश एंड फेब्स, 2014)। सहकर्मी संबंधों की एक उप-प्रणाली दोस्ती है। यूनिस एंड स्मॉलर (1989) ने कहा कि घनिष्ठ मित्रता, सामाजिक संवेदनशीलता जैसे पारस्परिक संवेदनशीलता, पारस्परिकता, सहयोग, और बातचीत की सुविधा प्रदान करके कार्यात्मक लाभ प्रदान करती है, जो संस्कषति के अनुकूल हैं।

सलमान अख्तर (2009) ने पश्चिमी देशों में अप्रवासी बच्चों की दोस्ती का अन्वेशण किया, जो अकल्चरेशन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। सम-नृजातीय दोस्ती (अपने जातीय समूह के दोस्त) व्यक्ति को शांत करने का मातृत्व भूमिका अदा करते हैं, लेकिन नकारात्मक पक्ष पर, व्यक्तिनिष्ठता को बाधित करते हैं। विषम-नृजातीय मित्रता (अन्य नृजातीय समूहों से संबंध रखने वाले), अकल्चरेशन की प्रक्रिया के द्वारा पैतृक भूमिका निभाते हैं, लेकिन इसमें भावनात्मक संबंध का अभाव होता है। विशेष रूप से विषम-नृजातीय मित्रों, या सम-नृजातीय दोस्तों के परिणामस्वरूप व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक विकास धीमा हो जाता है।

10.3.2.4 शिक्षा

याद करें कि हमने बाल विकास पर भाई-बहनों के सकारात्मक प्रभावों के बारे में चर्चा की थी, जो इस बात पर निर्भर था कि इलाके में एक विद्यालय था। औपचारिक शिक्षा और अनौपचारिक शिक्षा सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त कौशल और मूल्यों को सिखाकर समाज में व्यक्तियों के आत्मसातकरण में महत्वपूर्ण होती हैं। जॉन डेवी (1899, 1916) ने समाज के लिए प्रासंगिक शिक्षा की निम्नलिखित भूमिकाओं को चित्रित कियाः

1) संस्कृति सम्प्रेषण

2) असमानता को कम करना

3) सामाजिक अनुकूलनशीलता और सामाजिक परिवर्तन

4) नए ज्ञान का अधिग्रहण

5) व्यक्तिगत विकास

गणित की उपलब्धि और क्षमताओं का क्रॉस-नेशनल अध्ययन इनमें सार्थक अंतर दिखाते हैं। गैरी (1996) का कहना है कि प्राथमिक नहीं, बल्कि द्वितीयक गणितीय क्षमता इन मतभेदों को प्रकट करती है। इसका मतलब यह है कि इस तरह के अंतर के लिए कारण सांस्कृतिक और सामाजिक कारक हैं, जैविक नहीं। पूर्वी एशियाई छात्रों की तुलना में अमेरिकी छात्र परिकलन में अधिक त्रुटियां करते हैं (मिउरा, ओकामोटो, किम, स्टीयर, और फेयोल, 1993)। यह संख्याओं में भाषायी अंतर के कारण हो सकता है, जापानी में 1 से 10 में अनूठे लेबल होते हैं, जबकि सभी संख्याओं में इन संख्याओं का संयोजन होता है (उदाहरण के लिए 11 ''दस-एक'') जबकि अंग्रेजी में, संख्या 1 से 19 और दर्शक की संख्या में अनोखे लवेल होते है।

शिक्षण शैली में सांस्कृतिक अंतर भी गणितीय और अन्य शैक्षिक क्षमताओं में अंतर के लिए जिम्मेदार हो सकता है। यह पाया गया है कि संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना में, चीनी और जापानी शिक्षकों ने छात्रों के साथ अधिक समय व्यतीत करते हैं और छात्रों ने प्रति दिन और प्रति वर्ष बिताये गए घंटे के मामले में स्कूल में अधिक समय बिताया। कुछ संस्कृतियाँ प्रमुख रूप से एक उपदेशात्मक शिक्षण शैली का विकल्प चुनती हैं, जहाँ शिक्षक छात्रों को मौखिक रूप से जानकारी प्रदान करते हैं और छात्र इसे अपनी समझ और स्मृति के अनुसार प्राप्त करते हैं। वैकल्पिक रूप से, अन्य संस्कृतियों में प्रमुख रूप से अधिक गतिशील शिक्षक होते हैं जो छात्रों के साथ सक्रिय रूप से शामिल होते हैं, उन्हें एक ऐसा मंच प्रदान करते हैं जहां छात्र स्वयं अवधारणाओं और दुनिया के कामकाज के सिद्धांतों को उजागर कर सकते हैं। अमेरिकी शिक्षण प्रणाली सही उत्तरों पर छात्रों की प्रशंसा करने में विश्वास करती है जबकि भारतीय, जापानी और ताइवान की संस्कृति छात्रों की गलतियों को सुधारने पर ध्यान केंद्रित करती है।

अंत में, निश्चित रूप से, राष्ट्रों के भीतर और साथ ही राष्ट्रों में एक शिक्षा प्रणाली की पाठ्यक्रम सामग्री में सांस्कृतिक अंतर परिलक्षित होता है। किसी पाठ्यक्रम की संरचना, विषयवस्तु और मंशा शायद समाज में राजनीतिक धारा के साथ-साथ संस्कृति को भी आकार और संशोधित कर सकती है। इसका एक नकारात्मक उदाहरण त्रिपुरा में स्कूलों के पाठ्यक्रम पर जमातिया और गुंडेमेडा (2019) का अध्ययन है, जिसने राज्य में कई संस्कृतियों, विशेषकर आदिवासी समूहों को हाशिए पर लाने के लिए प्रोत्साहित किया। वे पाते हैं कि यद्यपि त्रिपुरा कई पहचान वाले लोगों के साथ एक राज्य है, शिक्षा प्रणाली उनका प्रतिनिधित्व करने में विफल रही है और इसके बजाय, एक अखंड पहचान को बनाए रखती है, बंगाली हिंदुओं द्वारा बंगाली को प्रशासनिक भाषा के रूप में एवं हिन्दू धर्म का मानकर उसका एकमार्गी बना दिया गया है। इस प्रकार शिक्षा, संस्कृति और समाज को आकार देने, पोषित करने तथा रूपांतरित करने में प्रमुख भूमिका अदा करती है। हालांकि, यह गुणवत्ता विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम संरचना को डिजाइन और कार्यान्वित करते समय सावधानी बरतने के लिए भी कहती है।

10.3.2.5 धर्म

काफी लंबे समय तक, धर्म और शिक्षा अलग-अलग नहीं थे। धार्मिक अधिवक्ता बच्चों को मूल्य के साथ-साथ शिक्षा और शैक्षिक संस्थानों ने धार्मिकता को प्रोत्साहित किया। प्राचीन इजराइल में यहूदी धर्म का धार्मिक पुस्तक के माध्यम से तोरा ने शिक्षा और साक्षरता को प्रोत्साहित किया (कॉम्पैरे एवं पायने, 1899)। हालाँकि, स्कूलों ने केवल लड़कों को अनुमति दी थी । 622 ईस्वी में, मदीना में इस्लामिक मस्जिदों (अब सउदी अरब में; अल-हसनी, 2011) में स्कूल खोले गए थे। बहुत पहले, 1500 और 600 ईसा पूर्व के बीच, वेद और अन्य हिंदू शास्त्र प्राचीन भारतीय में शिक्षा के स्रोत थे जिसमे व्याकरण, रचना, छंद, तर्क और अन्य व्यावसायिक कौशल की शिक्षा पर बल था (गुप्ता, 2017)। गुरुकुल महत्वपूर्ण संस्थान थे, जहां ब्राह्मण छात्र घर लौटने से पहले लगभग बारह वर्ष तक ब्राह्मण शिक्षक के अधीन अध्ययन करते थे। जबकि उन्होंने कई जीवन मूल्यों को सिखाया, धर्म और इसका इतिहास तंत्र पर हावी रहा।

आधुनिक समय में भी, संस्कृति और/या परिवार में धार्मिकता के स्तर के आधार पर, धर्म समाजीकरण में प्रमुख भूमिका निभाता है। इंग्लैंड में बसे पंजाबी माता-पिता के लिए, धार्मिक अभ्यास अगली पीढ़ी के लिए भाषा और सिद्धांतों के महत्वपूर्ण वाहक हैं (दोसांझ और घुमन, 1997)। कुछ धर्म जैसे यहूदी धर्म में बार मिट्ज्वा जैसे समारोहों के द्वारा और इस्लाम में रमजान के उपवास के दौरान किशोरावस्था में व्यक्तियों के वयस्क होने के लिए संक्रमण का जश्न मनाते हैं। अफ्रीका में धार्मिक विश्वास नैतिक विकास (ओकोंकोव, 1997) और इंग्लैंड में हिंदुओं और मुस्लिमों का आत्महत्या-दृष्टिकोण (कमल और लोवेनथल, 2002) के साथ एक मजबूत जुड़ाव व्याप्त हैं।

फोनेर एवं अल्बा (2008) ने पाया कि संयुक्त राज्य अमेरिका में ईसाई धर्म में परिवर्तित होने वाले व्यक्तियों के अकल्चरेशन प्रक्रिया में सकारात्मक परिणाम होता है। पहले से ही बहुसंख्यकों के धर्म से संबंधित होने पर जहां कोई पर्वशन करता है तो वह भी सामाजिक गतिशीलता में भी मदद करता है (कैडेज और एक्लंड, 2007)। हालांकि, मजबूत धार्मिकता किसी नई संस्कृति में आत्मसात करने पर नकारात्मक प्रभाव डालती है क्योंकि वे अपनी संस्कृतियों को प्राथमिकता देते हैं (बोरुप और अहलिन, 2011)।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 1

निम्नांकित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजियेः

1) एक समवयस्क समूह (पीयर ग्रुप) में एक ..... जो कि मित्रों के निकट होते हैं, समान आयु वर्ग के होते हैं, और सामूहिक रूप से समान गतिविधियों में संलग्न होते हैं।

2) अकल्चरेशन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति .....।

3) ..... उस संस्कृति में होता है जहां हम पैदा होते हैं और संस्कृति के परिचित होने की प्रक्रिया जन्म के ठीक बाद शुरू होती है।

4) ..... एक गतिशील प्रणाली है जो किसी आबादी में औसत, मुख्यधारा और प्रतिनिधि प्रवृत्तियों का वर्णन करती है।

5) एक शिशु के व्यक्तित्व और उसके अन्य मनोवैज्ञानिक मेकअप पर सबसे पहला पर्यावरणीय प्रभाव ..... से आता है।

10.4 विभिन्न संस्कृतियों में स्व

एनपीआर के इनविजिबल पॉडकास्ट के एपिसोड में से एक केरेन बायरन नाम की एक महिला की कहानी से शुरू होता है, जिसका बायाँ हाथ बिना उसकी इच्छा या संज्ञानात्मक प्रयासों के हिट हो जाता है, एक आवेग या टिक जैसा नहीं होता है। वह एलियन हैंड सिंड्रोम के रूप में जानी जाने वाली एक संलक्षण से पीड़ित है, जो उसके मिरगी संबंधी दौरे को नियंत्रित करने के लिए उसके कॉर्पस कॉलोसुम (तंत्रिका तंतुओं का एक संग्रह जो बाएं मस्तिष्क गोलार्द्ध को दाये से जोड़ता है) के शल्य क्रिया के माध्यम से हटाने के बाद उभरा। इसका मतलब है कि उसके दोनों गोलार्द्ध स्वतंत्र रूप से काम करते हैं। उसकी टिप्पणियों के अनुसार, बाया हाथ उसे हर बार मारता है जब वह कुछ मानक रूप से गलत करता है-जैसे स्पष्ट भाषा का उपयोग करना। ऐसा लगता है जैसे उसके बाएं हाथ में ''खुद का दिमाग'' है। इस कहानी को प्रसारित करने वाले एपिसोड को ''द कल्चर इनसाइड'' नाम दिया गया था।

संस्कृति केवल किसी खास समाज और देश जिसमें हम रहते हैं तक ही सीमित नहीं रहती है बल्कि हम इसके वाहक बन जाते हैं, जो अक्सर हमारी व्यक्तिगत संस्कृतियों के संदर्भ में घटनाओं और अवधारणाओं को समझने और अनतृथ करने के लिए होता है। हमारी व्यक्तिगत संस्कृतियाँ हमारी आत्म-अवधारणाओं का एक हिस्सा हैं। वेर्ले और फसबेंडर (2019) ने आत्म-अवधारणा को ''अधिगमित मनोवृत्तियों, विश्वासों, मूल्यांकन निर्णयों की जटिल, संगठित, और गत्यात्मक तंत्र के रूप में परिभाषित किया है।'' स्वयं की भावना मोटे तौर पर निम्न ढंग से वर्गीकृत की जा सकती है (मार्कस और किताामा, 1991):

व्यक्तिवादी समाजों में स्व की भावनाः आमतौर पर पश्चिमी समाजों में प्रचलित है जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका में। स्व की एक स्वतंत्र भावना स्वतंत्रत मूल्यों को आंतरिक बनाने का एक परिणाम है, जहां व्यक्ति जीवन में अधिक आत्म-केंद्रित होते हैं। व्यक्तिवादी संस्कृति समूह या सामूहिक लक्ष्यों, आत्म-बोध और ''सम्मिश्रण'' से अधिक व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्रोत्साहित करती है। वे अपने समाज के सदस्यों में व्यक्तिवादी या स्वतंत्र भावना को बढ़ावा देते हैं। उपलब्धियों के लिए व्यक्ति अपने गुणों, विशेषताओं और निर्णयों को श्रेय देते हैं। एक व्यक्तिवादी समाज के लोगों में विश्वास का व्यापक दायरा पाया गया है, जिन्हें आउटग्रुप सदस्य माना जा सकता है (होर्न, 2015)।

सामूहिकवादी समाजों में स्व की भावना : पूर्वी और अन्य गैर-यूरोपीय संस्कृतियों को आमतौर पर एक अधिक निर्भर जीवन शैली और लक्ष्यों को प्रोत्साहित करने के लिए माना जाता है, अर्थात स्व का अन्योन्याश्रित भाव। वे समूह के प्रति अनुरूपता और वफादारी को

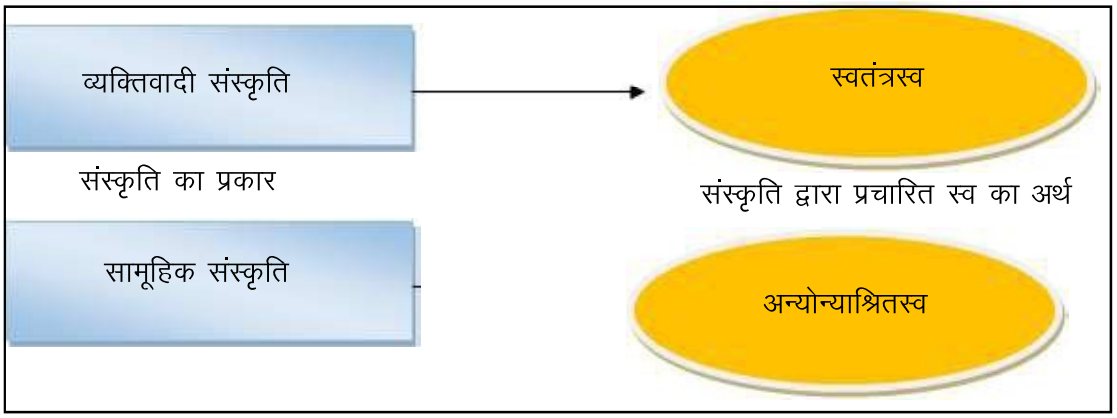

चित्र 10.1: संस्कृति के प्रकार और स्व का अर्थ

महत्व देते हैं। समूह के सदस्यों से अपेक्षा की जाती है कि वे सामूहिक सामंजस्य बनाए रखें और स्वयं के हितों पर समूह के हितों को प्राथमिकता दें (हॉफस्टेड, 2001)। होर्ने (2015) ने पाया कि सामूहिक समाज में, व्यक्तियों के विश्वास का एक संकुचित दायरा होता है और वे बाहरी समूहों के प्रति अधिक भेदभाव करते हैं। वे समूह के व्यक्तियों के लिए अपने विश्वास को रोकते हैं।

हालाँकि, इन श्रेणियों की सीमाएँ अच्छी तरह से परिभाषित नहीं हैं। एक समाज को एक या दूसरे के रूप में वर्गीकृत करने की आवश्यकता नहीं है। भारत को प्रमुख रूप से एक सामूहिक समाज माना जाता है। हालाँकि, आगे के अध्ययन में पाया गया है कि यह अत्यधिक स्थिति-आधारित होती है (त्रिपाठी, 1988)। उदाहरण के लिए, 2001 के एक अध्ययन में, छात्रों को दोस्तों के साथ बातचीत करने, परिवार के साथ संबंध बनाने और वरिष्ठों के साथ संलग्न होने पर एक सामूहिक दृष्टिकोण था। हालाँकि, जब व्यक्तिगत मुद्दों और मामलों को मुख्य बनाया गया था, तो उनके पास एक व्यक्तिपरक अभिविन्यास था (सिन्हा, सिन्हा, वर्मा, और सिन्हा, 2001)। लैंगिक अंतर पाया गया, जहां भारतीय महिलाओं में सामूहिक अभिविन्यास था (झा और सिंह, 2011)। यह जटिल व्यक्तिवादी-सामूहिकतावादी सह-अस्तित्व भारत में संभव है क्योंकि भारतीय मानस में विरोधाभासों और विसंगतियों को सहन करने की उच्च क्षमता है, इस प्रकार, यह एक व्यक्तिवादी सामूहिक समाज बन जाता है (सिन्हा, 1988)। इसलिए, भारतीय जनसंख्या में पारंपरिक रूप से सामूहिक और पश्चिमी व्यक्तिवाद दोनों का एकीकरण देखा गया है।

10.4.1 संस्कृतियों में विभिन्न सेल्फ कन्स्ट्रुअल के परिणाम

मात्सुमोतो और जुआंग (2008) ने नीचे दी गई तालिका में दो अलग-अलग आत्म-बाधाओं के लिए संज्ञानात्मक, भावनात्मक और प्रेरक परिणामों को चित्रित किया है। उन्होंने व्यक्तिवादी और सामूहिक समाजों के बीच तुलना करने के लिए 7 क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया। इन क्षेत्रों में आत्म बोध, सामाजिक स्पष्टीकरण, प्राप्त करने की प्रेरणा, आत्म-संवर्धन, भावना का सामाजिक निहितार्थ, सामाजिक निहितार्थ और स्वदेशी भावनाएं, और खुशी शामिल हैं।

तालिका 10.1 : मात्सुमोतो और जुआंग (2008) द्वारा वर्णित व्यक्तिवादी और सामूहिक आत्म - प्रतिबंधों के परिणामों का सारांश

क्षेत्र	व्यक्तिवाद के लिए परिणाम	सामूहिकता के लिए परिणाम
आत्म प्रत्यक्षण	स्व का प्रत्यक्षण आंतरिक विशेषताएं: कौशल और व्यक्तित्व शीलगुण के रूप में करना	स्व का प्रत्यक्षण अपने सामाजिक संबंधों के संदर्भ में करना
सामाजिक स्पष्टीकरण	दूसरों के व्यक्तिवाद की कल्पना और व्यवहार के लिए शीलगुण कारकों को दोषी ठहराना, बड़े पैमाने पर स्थितिजन्य नियंत्रण को अनदेखा करना	विशिष्ट संदर्भ में दूसरों के व्यवहार की व्याख्या करना और उन्हें स्थितिजन्य कारकों के पर गुणारोपित करना
उपलब्धि के लिए प्रेरणा	सफलता के लिए प्रयासरत व्यक्तिगत लक्ष्यों से जुड़े रहने की इच्छा। संबद्धता अभिविन्यास से असंबंधित उपलब्धि अभिविन्यास।	संबद्धता अभिविन्यास से संबंधित उपलब्धि अभिविन्यास, जिसमे सामाजिक लक्ष्य . दूसरों की अपेक्षाएं और दायित्व शामिल होती हैं।

स्व वृद्धि	स्पष्ट आत्म-वृद्धि। व्यक्तिगत सफलता के लिए आंतरिक कारकों पर और विफलताओं के लिए वाह्य कारकों पर गुणारोपण (आत्म-सेवी पूर्वाग्रह।	व्यक्त परिवेश में, आत्म-सेवी पूर्वाग्रह के विपरीत प्रदर्शन । अव्यक्त आत्म-वृद्धि पाई जाती है।
संवेग का सामाजिक निहितार्थ	सामाजिक रूप से विच्छेदित भावनाएंः सफलता के कारण गर्व और वर्चस्व (सकारात्मक), और कमियों से क्रोध और कुंठा (नकारात्मक)	सामाजिक रूप से लगी हुई भावनाएंः सकारात्मक-स्नेह और सम्मान;ऋणात्मक, ऋणग्रस्तता और अपराध बोध
सामाजिक निहितार्थ और स्वदेशी संवेग	भावनाओं के अधिक व्यक्तिगत/निजी पहलुओं विशिष्ट होते हैं और इन्हें संवर्धित किया जाता है, हालांकि सामाजिक गुण मौजूद रहता है।	भावनाओं के सामाजिक और सार्वजनिक पहलुओं से संबंधित कुछ विशिष्ट, स्वदेशी भावनाओं को देखा जाता है
खुशी	खुशी या सामान्य अच्छी भावनाएं सामाजिक रूप से विच्छेदित भावनाओं के साथ अधिक जुड़ी हुई हैं	खुशी सामाजिक रूप से जुड़ी भावनाओं के साथ प्रमुखता से जुड़ी हुई है

कोई स्वयं का कैसे प्रत्यक्षण करता है (स्वयं की धारणा), संस्कृति का एक महत्वपूर्ण उत्पाद है जिसमे वे बड़े होते हैं। व्यक्तिवादी समाजों के सदस्य अपने कथित कौशल और व्यक्तित्व लक्षणों के आधार पर खुद को लगातार विभिन्न संदर्भों में देखने में सक्षम होते हैं। यह पूर्वी समाजों में अधिक कठिन कार्य हो जाता है, जहाँ आत्म धारणा संदर्भ के साथ बदलती है। स्व-अवधारणा पर अंतः-सांस्कृतिक शोध यह दर्शाता है कि अमेरिकियों ने अधिक स्व-मूल्यांकनत्मक बयानों पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि भारतीयों ने अपनी सामाजिक पहचान (धवन, रोसमैन, नायडू, कोमिला, और रेटटेक, 1995) पर काफी जोर दिया।

सामाजिक स्पष्टीकरण का तात्पर्य किसी की समझ और दूसरों के व्यवहार के गुनरोपण से है। हाइडर (1958) ने बताया कि लोग व्यवहार के लिए शीलगुण कारकों (अभिनेता की आंतरिक विशेषताओं जैसे व्यक्तित्व) या स्थितिजन्य कारकों (बाहरी या पर्यावरणीय कारक अभिनेता के नियंत्रण से बाहर) पर गुनरोपण करते हैं। व्यक्तिवादी समाज के सदस्य दूसरों के व्यवहार को व्यक्तिवाद पर और शीलगुण कारकों पर गुनरोपण करते हैं जबकि सामूहिकता में इसके विपरीत प्रवृत्ति होती है। उदाहरण के लिए, भारतीय अक्सर अमूर्त उद्देश्यों के बारे में सोचने में असमर्थ होते हैं और दूसरों के व्यवहार के लिए स्थितिजन्य विवरण प्रदान करते हैं, जबकि अमेरिकी इन कारणों की अनदेखी करते हैं और शीलगुण कारणों (मिलर, 1984) पर ध्यान केंद्रित करते हैं। सागी, एलिसूर, और यामूची (1996) ने पाया कि जापान जैसे सामूहिक समाजों के प्रतिभागियों ने व्यक्तिगत उपलब्धि अभिविन्यास को हंगरी जैसे व्यक्तिवादी समाजों की तुलना में कम प्रदर्शित किया। पूर्व के समाजों में सामूहिक उपलब्धि की प्रवृत्ति अधिक पाई गई। प्राप्त करने की प्रेरणा व्यक्तिवादी समाजों में एक व्यक्ति की व्यक्तिगत वृद्धि से भी संबंधित है, लेकिन सामूहिक समाजों में यह सामाजिक लक्ष्यों, जैसे कि अनिवार्य भावनाओं के लिए जाता है। तुर्की जैसी संस्कृतियों में, उपलब्धि प्रेरणा सामाजिक और व्यक्तिगत दोनों तत्वों का अनुसरण करती है (फेटल एंड क्ले, 1993)।

एकर और विलियम्स (1998) अहंकार-केंद्रित बनाम अन्य-केंद्रित भावनाओं के बारे में बात करते हैं। उन्होंने बताया कि व्यक्तिवादी समाजों के सदस्य (अमेरिका) अहं-केंद्रित भावनाओं जैसे कि गर्व और क्रोध (सामाजिक रूप से विच्छेदित भावनाओं के रूप में भी कहा जाता

है (किटायमा, मार्कस और कुरोकावा, 1993) को और अधिक तीव्रता से महसूस करते हैं। वैकल्पिक रूप से, सामूहिक समाज के सदस्य (जापान) अन्य-केंद्रित भावनाओं को अधिक तीव्रता से महसूस करते हैं, जैसे कि सम्मान, मित्रता (सामाजिक रूप से संलग्न भावनाएं)। सामान्य और अधिक सार्वभौमिक भावनाओं को विभिन्न तीव्रता की अभिव्यक्तियों के साथ महसूस किया जा सकता है, और अलग-अलग संस्कृतियों में सामाजिक स्वीकृति के संदर्भ में भिन्न हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, ओगारकोवा, सोरियानो और ग्लैडकोवा (2016) के एक अध्ययन में अंग्रेजी, स्पेनिश, रूसी भाषाओं में गुस्से के रूपकों का पता लगाया गया। अंग्रेजी भाषा ने क्रोध के अधिक तीव्र, अभिव्यंजक और असम्बद्ध संस्करण प्रदर्शित किए, जबकि अन्य दो भाषाओं की तुलना में अनुभव और प्रदर्शन की उच्च प्रवृत्ति का प्रदर्शन किया। क्रोध का कारण स्थितिजन्य की तुलना में आंतरिक (शीलगुण) पाया गया, और अंग्रेजी में अधिक सामाजिक रूप से स्वीकार किया गया।

इसके अलावा, स्वदेशी भावनाएं जो सामूहिक समाजों के लिए अद्वितीय हैं, सार्वजनिक पहलुओं से भी संबंधित हैं। जैसे अमाए (दोई, 1973) एक स्वदेशी जापानी भावना है जो प्राधिकरी के आंकड़ों पर निर्भरता और उनकी स्वीकृति, परोपकार और भोग के लिए तड़प को संदर्भित करता है। यह ध्यान देने योग्य है; हालांकि, एकर और विलियम्स ने पाया कि अन्य-केंद्रित भावनात्मक अपीलों ने स्वयं-केंद्रित भावनात्मक अपील के उपयोग की तुलना में व्यक्तिवादी समाजों के सदस्यों को मनाने में शायद उनकी नवीनता के कारण बहुत बेहतर काम किया। समान कारणों से सामूहिक समाजों में विपरीत पाया गया।

दिलचस्प बात यह है कि, सामूहिकतावादी समाजों की तुलना में उच्च व्यक्तिवादी समाजों में खुशी का स्तर काफी अधिक पाया गया (सुह और ओशि, 2002)। इसके संभावित कारण उनके सामाजिक कुशल क्षेम (एस डब्ल्यू बी) के लिए सांप्रदायिक संबंधों पर सामूहिकवादी सदस्यों की निर्भरता है, जबकि व्यक्तिवादी सदस्यों (ये, एनजी, लियान, 2014; सूह एवं ओशि, 2002) के व्यक्तिगत प्रयासों के साथ सामाजिक कुशल क्षेम (एस डब्ल्यू बी) का सीधा संबंध है। सरल शब्दों में, सामाजिक रूप से व्यस्त भावनाएं सामूहिकतावादी समाजों में खुशी के साथ जुड़ी हुई हैं, जबकि सामाजिक रूप से विच्छेदित भावनाएं व्यक्तिवादी समाजों में के साथ जुड़ी हुई हैं।

10.4.2 बहुसांस्कृतिक पहचान का मामला

परिवहन और वैष्वीकरण के तेज तरीकों ने एक ऐसे युग को जन्म दिया जहाँ व्यक्ति अपने मूल समाजों तक ही सीमित नहीं थे। इसने पर्यटन और प्रवास के माध्यम से प्रत्यक्ष अंतर. सांस्कृतिक प्रदर्शन का एक बड़ा अवसर प्रदान किया। यह एक्सपोजर नई भाषाओं, आदतों और सामाजिक शिष्टाचार को चुनने की भी अनुमति देता है। विशेष रूप से अप्रवासियों में, एक अस्वाभाविक पहचान को बनाए नहीं रखा जाता है क्योंकि वे एक अलग संस्कृति में एक छलांग लगाते हैं, बल्कि उन समाजों के मूल्यों और आदतों को भी प्रभावित करते हैं जिनमें वे मूल रूप से संस्कृतनिष्ठ हुए। एक अलग जाति या धर्म के परिवारों में गोद लिए गए बच्चे भी कई सांस्कृतिक पहचान रख सकते हैं।

बहुसांस्कृतिक पहचान का अध्ययन करने के लिए, हांग, मॉरिस और बेनेट-मार्टिनेज (2016) ने तीन स्तरों पर अनुसंधान का अवलोकन कियाः अन्तरा-व्यक्तिगत, अन्तर-व्यक्तिगत, और सामूहिक।

10.4.2.1 अंतरा-वैयक्तिक स्तर पर

बहुल संस्कृतियों के साथ सक्षम पहचान को मनोवैज्ञानिक के साथ-साथ सामाजिक. सांस्कृतिक क्षेत्रों में समायोजन के लिए सकारात्मक परिणाम पाए गए हैं (मॉरिस, चिउ, एवं लियू, 2015)। हाँग एवं उनके सहयोगियों ने अनुमान लगाया गया है कि सकारात्मक एनकल्चरेशन से इस तरह के परिणाम आ सकते हैं जो आंतरिक कारकों (जैसे द्विभाषी प्रवीणता एवं मजबूत सामाजिक समर्थन) और बाहरी कारकों (जैसे पूर्वाग्रह को हतोत्साहित करने वाली राज्य की नीतियां) का परिणाम हो सकती हैं। द्विसांस्कृतिक व्यक्तियों के बीच मध्य अंतर इन पदों में देखा जाता है (i) दो संस्कृतियों के मध्य में दूरी या प्रत्यक्षित विच्छेद (ii) दो संस्कृतियों के बीच अंतर्द्वंद (प्रत्यक्षित)। सीधे तौर पर कहा जाए तो, न्यून दूरी और कम अंतर्द्वंद के मध्य द्विसांस्कृतिक व्यक्तियों के भीतर चिंता कम हो जाती है (हिर्श एवं कांग, 2015)।

10.4.2.2 अंतर-वैयक्तिक स्तर पर

अंतर-वैयक्तिक स्तर का प्रभाव व्यापक रूप उस पहचान को संदर्भित करता है, जिसमें लोग ध्यान केंद्रित करते है जब बहुसांस्कृतिक पहचान के लोगों का सामना होता है। किसी की पहचान के बारे में स्वयं और दूसरों की धारणाओं में विसंगतियां कठिनाइयों को जन्म देगी (वाइली एवं ड्यूक्स, 2010; सांचेज, शिह एवं विल्सन, 2014)। बहुसांस्कृतिक पहचान के लोग अक्सर उप-जातीय समूहों से संबंधित अन्य व्यक्तियों से अस्वीकृति या संकोच का सामना करते हैं। इसके परिणामस्वरूप निम्न आत्मसम्मान, जुड़ाव की भावना (सांचेज, 2010 (टाउनसेंड, मार्कस, एवं बर्ग्सिकर, 2009) और खराब शैक्षणिक प्रदर्शन (मिस्त्री, कॉन्ट्रेरास, एवं पुफाल-जोन्स, 2014)। पहचान स्विचिंग और/या पहचान पुनर्परिभाषा का उपयोग करते हुए व्यक्ति अपनी बहुसांस्कृतिक पहचान के कारण भेदभाव से निपटते हैं:

पहचान पुनर्परिभाषा: लक्षित अस्मिता के सकारात्मक गुणों को भुनाना ताकि सकारात्मक संघों का निर्माण हो और उक्त पहचान के बारे में बेहतर महसूस हो।

अस्मिता बदलाव: कम असुरक्षित या अधिक सकारात्मक रूप से देखी जाने वाली पहचान की तरफ बदलाव।

10.4.2.3 सामूहिक स्तर पर

बहुसांस्कृतिक समाजों के संदर्भ में दो नीतियों पर चर्चा की जाती है: बहुसंस्कृतिवादी नीतियां और अंतःसंस्कृतिवादी नीतियां:

बहुसंस्कृतिवादी नीतियां परंपराओं और समुदायों से संबंधित अपने मूल सार में कई संस्कृतियों के संरक्षण पर जोर देती हैं। हालाँकि, यह उन व्यक्तियों के आत्मसम्मान के लिए सकारात्मक होता है जिनकी जातीय अल्पसंख्यक से उच्च पहचान है (वेरकुएंत, 2009), यह रूढ़िवादीता को प्रबल करने के जोखिम में आता है (गुटिएर्रे एंड उन्जुएटा, 2010)। अंतः संस्कृतिवादी नीतियां बहुसांस्कृतिक नीतियों से असंतोष का परिणाम हैं क्योंकि बाद में राष्ट्रीय सद्भाव में बाधा आ सकती है (रिट्ज, ब्रेटन, डायोन, एंड डायोन, 2009)। अंतर संस्कृतिवाद अंतरसमूह संपर्क एवं नम्यता को प्रोत्साहित करता है जैसाकि यह अंतर सांस्कृतिक एक्सपोजर से प्रभावित होता है। उनका मानना है कि संस्कृतियां ऐतिहासिक रूप से तरल (मॉरिस, चिउ और लियू, 2015) न कि कठोर रही हैं, क्योंकि वे विभिन्न संस्कृतियों, प्रौद्योगिकियों या अन्य नवीनताओं के संपर्क में थे।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 2

निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति करें:

1) भारत को प्रमुख रूप से एक ..... समाज माना जाता रहा है।

2) ..... से तात्पर्य दूसरों के व्यवहार के बारे में किसी व्यक्ति की समझ एवं गुणारोपण है ।

3) हमारी ..... हमारी आत्म-संप्रत्ययों का एक हिस्सा हैं।

4) ..... इंटरग्रुप संपर्क और अपनी सांस्कृतिक पहचान के लचीलेपन को प्रोत्साहित करता है जैसा कि इंटरकल्चरल एक्सपोजर से प्रभावित होता है।

5) समूह के सदस्य ..... समाज से अपेक्षा की जाती है कि वे सामूहिक सामंजस्य बनाए रखें और स्व-हितों पर समूह के हितों को प्राथमिकता दें।

10.5 विभिन्न संस्कृतियों में सामाजिक व्यवहार

कई अखबारों के लेख (जैसे, आउटलुक वेब ब्यूरो, 2018), ब्लॉग और फोरम भारतीयों के गन्दगी करने के बारे में बहस करते हैं। कई लोग मानते हैं कि भारत में जो लोग गलियों को गन्दा करते रहते हैं वही लोग जब देश-विदेश जाते हैं तो अच्छी तरह से व्यवहार करते हैं और कर्तव्यनिष्ठ हो जाते हैं। व्यवहार में सामंजस्य या विसंगतियां कई सामाजिक चरों पर निर्भर करती हैं, इस मामले में, शायद, भारत में कूड़े सम्बंधित गंदगी के व्यवहार की सामाजिक स्वीकार्यता है।

संस्कृति का इस बात पर बहुत नियंत्रण होता है कि कैसे समाज के सदस्य एक-दूसरे के साथ बातचीत, बंधन या अंतःक्रिया करते हैं और साथ ही साथ आउट-समूह के साथ कैसे अंतर्क्रिया करते हैं। इस खंड की शुरुआत में शब्द अन्तःसमूह और वाह्य-समूह से परिचित होना कार्यात्मक होगा, क्योंकि उनका उपयोग अक्सर किया जाएगा। मास्लो (1968), अपनी आवश्यकताओं के श्रेणीबद्ध मॉडल में, महत्वपूर्ण जरूरतों में से एक के रूप में संबंधन की आवश्यकता का उल्लेख करता है, एक सामाजिक समूह में स्वीकृति और संबद्धता की भावना महसूस करता है।

अन्तःसमूहः वह समूह जिसके साथ हम खुद को जोड़ते हैं एवं उससे जुड़ाव महसूस करते हैं। उदाहरण के लिए, हमारे धार्मिक समुदाय, राष्ट्र, परिवार, गाना बजानेवालों का समूह, फुटबॉल टीम, इत्यादि।

वाह्य समूहः ऐसा समूह जिससे हम खुद को नहीं जोड़ पाते अथवा जिसके साथ जुड़ाव नहीं महसूस होता।

व्यक्ति आमतौर पर कई अन्तःसमूहों के हिस्सा होते है। कुछ समूह सदस्यता हमारे लिए दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण होती हैं (बर्नस्टीन, 2015)। इसके अलावा, कुछ समूह की सदस्यताएं अन्य की तुलना में प्रमुख होती हैं और/या किसी अन्य समय के विपरीत एक खास समय में ज्यादा प्रमुख हो जाती हैं। उदाहरण के लिए, रूढ़िगत रूप से, एशियाई लोगों को गणित में अच्छा माना जाता है, जबकि महिलाओं को उसी मामले में अक्षम माना जाता है। किसी समूह के रूढ़ियुक्ति के बारे में सजग होने से उन रूढ़ियों को मजबूत किया जा सकता है। शिह, पिटिंस्की, एवं अंबाडी (1999) यह जानना चाहते थे कि एशियाई महिलाएं गणितीय कार्य पर कैसा प्रदर्शन करेंगी जब उनकी एशियाई पहचान को उनकी

लिंग पहचान की तुलना में उनके लिए प्रमुख बनाया गया था। परिणामों से पता चला कि एशियाई पहचान (अधिक सक्षम पहचान) को और अधिक प्रमुख बनाना प्रतिभागियों के गणितीय प्रदर्शन को बढ़ाता है, जबकि महिला की पहचान को ज्यादास्पष्ट करने पर, उनके प्रदर्शन में बाधा उत्पन्न हुई। गणितीय प्रदर्शन, जाहिर है, एक सामाजिक व्यवहार नहीं है, कम से कम इस संदर्भ में। हालांकि, उदाहरण यह समझने का कार्य करती है कि समूह के बारे में समूह की प्रमुखता और विद्यमान प्रत्यक्षण स्थिति के आधार पर हमारे व्यवहार को कैसे प्रभावित कर सकती हैं।

यह खंड इस बात पर प्रकाश डालेगी कि संस्कृति किस प्रकार सामाजिक मेल-मिलाप में व्यवहार को प्रभावित कर सकती है, समूह अंतःक्रिया गतिकी, व्यक्ति का प्रत्यक्षण, व्यक्तिवादी-सामूहिकवादी मतभेदों, गुणारोपण, आक्रामकता और निकट संबंधों के विषयों की खोज कर सकती है।

10.5.1 समूह सदस्यता की गतिशीलता में अंतःसांस्कृतिक विभेद

समूह की सदस्यता की स्थिरता संस्कृति के अनुसार भिन्न होती है। उत्तरी अमेरिकियों में आम तौर पर एशियाई संस्कृति के सदस्यों की तुलना में अधिक स्थिर अन्तःसमूह एवं वाह्यसमूह सदस्यता होती है (मात्सुमोतो एवं जुआंग, 2008)।

जैसा कि अध्याय में पहले प्रदर्शित किया गया है कि, सामूहिकवादी संस्कृतियां अपने व्यक्तिवादी संस्कृतियों की तुलना में अपने अन्तःसमूह एवं वाह्यसमूह सदस्यों के बीच में कड़ा विभेद प्रस्तुत करती हैं, (ट्रीअन्डिस, 1988)। व्यक्तिवादी संस्कृतियों जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना में इसका नकारात्मक प्रभाव जापान और कोरिया जैसे समूहवादी संस्कृतियों में वाह्यसमूह के सदस्यों या अजनबियों के साथ संवाद करने में कठिनाइयों में परिलक्षित होता है (गुडीकुंस्ट, यून, एवं निशिदा, 1987)। इसके अलावा, सामूहिकवादी संस्कृतियों में वाह्यसमूह के साथ संचार का निजीकरण स्थितिजन्य कारकों पर अत्यधिक निर्भर करता है, जबकि स्थितिजन्य मांगें व्यक्तिवादी संस्कृतियों में सामान मामलों में उतनी महत्वपूर्ण भूमिका नहीं अदा करती हैं।

अपने स्वयं के सदस्यों के साथ संचार और अंतःक्रिया के संबंध में, सामूहिकवादियों (हांगकांग, चीन के छात्र) में व्यक्तिवादियों (अमेरिकी छात्रों) की तुलना में एक-दूसरे के साथ लंबे समय तक अंतर्क्रिया होती थी, हालांकि पूर्व वाले में कम बार अंतःक्रिया होती थी (व्हीलर, रीस एवं बॉन्ड, 1989)। चूँकि सामूहिकतावादी, व्यक्तिवादियों की तुलना में कम अंतःसमूहों से संबंधित होते हैं, वे अपने मौजूदा अंतःसमूह के प्रति बढ़ी हुई प्रतिबद्धता के माध्यम से क्षतिपूर्ति करते हैं और समूह पहचान/जुड़ाव की अधिक समझ रखते हैं। सामूहिकवादी, संसक्ति और सद्भाव को महत्व देते हैं जिसके कारण वे सामाजिक अनुरूपता के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं (मात्सुमोतो एवं जुआंग, 2008)।

एन्सवर्थ और उसके सहयोगियों (1978) द्वारा समूह के संदर्भ में आशक्ति सिद्धांत और शैलियों का अध्ययन किया गया है (उदा. रोम एवं मिकुलिनसर, 2003(डीमार्को एवं न्यूहैजर, 2018)। सरल पदों में, समूह आशक्ति दुश्चिंता अन्तःसमूह में स्वीकार नहीं किए जाने की असुरक्षा से संबंधित है, जबकि समूह आशक्ति परिहार उनके अन्तःसमूह में निर्भरता से परहेज (समूह के लिए जुड़ाव महसूस करने के बावजूद) करने की कोशिश द्वारा परिलक्षित होती है। इस प्रकार, दुश्चिंता समूह के सदस्य, ऐसा व्यवहार को प्रकट करते हैं, जो उनकी समूह के साथ अंतरंगता को बढ़ाता है, जबकि परिहार समूह के सदस्य अन्तःसमूह से अपनी दूरी बनाए रखना पसंद करते हैं (स्मिथ एवं उनके सहयोगी, 1999)। समूह के साथ

घनिष्ठता बढ़ाने वाले व्यवहार में निम्न बातें शामिल हो सकती हैं (जैसा कि मात्सुमोतो और जुआंग, 2008 में परिभाषित किया गया है):

अनुरूपता: वास्तविक या प्रत्यक्षित सामाजिक दबाव का पालन करना।

अनुपालन: स्पष्ट रूप से (सार्वजनिक रूप से प्रकट व्यवहार में) सामाजिक दबाव का पालन करना, हालांकि निजी विश्वास अपरिवर्तित रह सकते हैं।

आज्ञाकारिता: किसी प्राधिकरी से प्राप्त कुछ प्रत्यक्ष निर्देशों या आदेशों का अनुपालन करना।

सहयोग: एक सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समूह के सदस्यों की एक साथ काम करने की क्षमता।

डीमार्को एवं न्यूहैजर, 2018 ने समूह में आशक्ति शैलियों और निवेश के बीच संबंधों की जांच की। प्रत्याशित रूप से, यह पाया गया कि परिहार समूह की आशक्ति शैली निचले समूह निवेश से संबंधित थी जबकि दुश्चिन्तित समूह के लगाव की शैली उच्च समूह निवेश से संबंधित थी।

10.5.2 अंतःसमूह पहचान बनाम अंतःसमूह पक्षपात

सामाजिक अस्मिता सिद्धांत (ताजफेल, 1978) इस धारणा पर आधारित है कि सामाजिक समूहों के संबंध में अस्मिता निर्माण से व्यक्ति की स्वयं की अस्मिता भी मजबूत और संरक्षित होती है। सिद्धांत अंतःसमूह अंतर्द्वंद को समूहआधारित आत्म-परिभाषाओं के एक प्रकार्य के रूप में एवं इसी नजरिये से देखता है (इस्लाम, 2014)। अंतःसमूह पक्षपात इस संभावना को संदर्भित करता है कि कोई अपने समूह का पक्ष लेगा और दूसरे समूह का बहिष्कार करेगा। ताजफेल और उनके सहयोगी (1971) ने एक न्यूनतम समूह प्रतिमान का उपयोग करके प्रदर्शन किया कि लोगों को केवल अमूर्त समूहों में वर्गीकृत करना ही अंतःसमूह पक्षपात उत्पन्न होने के लिए पर्याप्त है। उन्होंने सहभागियों को एक स्क्रीन पर प्रदर्शित डॉट्स की संख्या के बारे में उनकी सटीकता/अनुमान के आधार पर दो समूहों में विभाजित किया। जब लोगों से धन आवंटित करने के लिए कहा जाता है (जबकि बताया गया था कि इससे उन्हें कितना पैसा प्राप्त होगा, यह प्रभावित नहीं होगा), सहभागियों ने अभी भी किसी व्यक्तिगत लाभ या हानि के अभाव में समूह के सदस्यों को अधिक धन आवंटित करने का विकल्प चुना।

जबकि कई पूर्व अध्ययनों से पता चलता है कि छोटे समूहों को बड़े समूहों में वर्गीकृत करना (उदाहरण के लिए, लड़कियों की फुटबॉल टीम और लड़कों की फुटबॉल टीम एक स्कूल फुटबॉल टीम में) अंतरसमूह पक्षपात को कम कर देगी (जैसे, गर्टनर एवं उनके सहयोगी, 1990), नए अध्ययन ठीक इसके विपरीत प्रभाव का सुझाव देते हैं (उदाहरण के लिए, हार्नसे एवं हॉग, 2000; टर्नर एवं क्रिस्प, 2010)। टर्नर और क्रिस्प ने पुष्टि की कि मजबूत अन्तः समूह की पहचान, व्यापक समूहों में पनर्वर्गीकरण के बाद अंतरसमूह पक्षपात का पूर्वकथन करेगी। वे प्रस्ताव करते हैं कि इस घटना का कारण किसी व्यक्ति को स्वयं को अलग करने और सकारात्मक रूप से मूल्यवान समूह से संबंधित होने या समूह को सकारात्मक रूप से देखने की आवश्यकता हो सकती है। यदि किसी के समूह को दूसरे समूह में मिला दिया जाता है, जो अन्य समूह कुछ महत्वपूर्ण कारकों के बराबर हैं, तो यह आगे सकारात्मक अंतर की आवश्यकता को ट्रिगर करेगा, इस प्रकार, अंतर समूह संघर्ष (ब्राउन एवं वेड, 1987) को बढ़ाता है। यही कारण हो सकता है कि फासीवाद को राष्ट्रवाद का एक कट्टरपंथी अवतार कहा जाता है, जहाँ (चरम) राष्ट्रवाद नस्लवाद और हिंसा की बढ़ावा देता है (टर्नर, 1975, पीटर्स, 2018)।

10.5.3 गुणारोपण

मनुष्यों में अपने और दूसरों के व्यक्तित्वों/व्यवहारों और उनके जीवन या सामान्य घटनाओं के कारणों और स्पष्टीकरणों को खोजने की प्रवृत्ति होती है। इस तरह के स्पष्टीकरण को गुणारोपण के रूप में जाना जाता है। यह ज्योतिष में लोगों के विश्वास और हमारे द्वारा प्राप्त आनंद को बज फीड पर्सनैलिटी क्विज से समझा सकता है। आप परीक्षाओं में अपनी असफलता का कारण परीक्षक की सख्त ग्रेडिंग या बुखार की वजह से खराब निष्पादन हो सकता है। ये गुणारोपण सच हो सकता है। आप अपनी कार को दूसरे चालक के अचानक ब्रेक लगाने की वजह से वाहन में दुर्घटनाग्रस्त होने का श्रेय दे सकते हैं, हालांकि यह सामने वाले वाहन से दूरी बनाए रखने में आपकी स्वयं की अक्षमता के कारण भी हो सकता है। यह एक कारण हो सकता है कि हम सेल्फ-ड्राइविंग कारों को स्वीकार करने में संकोच क्यों करते हैं क्योंकि दुर्घटनाओं के मामले में, किसी को दोषी ठहराना अत्यधिक जटिल हो जाता है। आपके एक मशीन के मौखिक रोड रेज की लड़ाई नहीं कर सकते जैसा कि आप एक समान रूप से क्रोधित मानव चालक के साथ हो सकते हैं।

गुणारोपण की त्रुटियां

लोग अपने स्वयं के नकारात्मक व्यवहारों (या विफलताओं) को बाहरी कारकों और सकारात्मक व्यवहारों (या सफलताओं) को आंतरिक कारकों, यानी स्वयं-सेवा पूर्वाग्रह (ब्रैडले, 1978) पर गुणारोपित करते हैं, मुझे कार्यालय के लिए देर हो गई थी क्योंकि यातायात अप्रत्याशित रूप से बहुत धीमा था), दूसरी ओर, वे आंतरिक कारकों के लिए दूसरों के व्यवहारों का श्रेय आतंरिक कारकों को देते हैं, जिसे मौलिक आरोपण त्रुटि कहते हैं (एफ ए ई; जोन्स एवं निस्बेट, 1971, ''वह कार्यालय में देर से आया क्योंकि वह एक आलसी व्यक्ति है जो अपने कैरियर को गंभीरता से नहीं लेता है'')। एक अन्य गुणारोपण की त्रुटि रक्षात्मक गुणारोपण है, जिसमें लोग पीड़ित को ही उसकी पीड़ा के लिए दोषी ठहराते हैं, उदाहरण के लिए महिला के यौन उत्पीड़न के कारण को हमलावर के अलावा अन्य सभी चीजों के लिए, और और काले जातीयता के लोगों के खिलाफ घृणा अपराधों को प्रत्यक्षित आक्रामकता के उपर गुणारोपित किया जाता है। थॉर्नटन (1988) के अनुसार, यह त्रुटि व्यक्ति को ऐसे अपराधों का शिकार बनने के लिए कम संवेदनशील महसूस कराती है। इसे सिर्फ न्याय विश्व परिकल्पना द्वारा समझाया गया है। एक संज्ञानात्मक त्रुटि की दुनिया निष्पक्ष है और अच्छे लोगों को पुरस्कृत किया जाता है, जबकि केवल बुरे लोगों को दंडित किया जाता है क्यूँकि वे दुर्भाग्य के लायक हैं।

अंतर-सांस्कृतिक अध्ययनों से संकेत मिलता है कि सांस्कृतिक अंतर स्थितियों की व्यापक श्रेणी भर में गुणारोपण शैली के रूप में उभरते हैं। जबकि पश्चिमी शोधकर्ता इस बात की परिकल्पना करते हैं कि व्यक्ति अपनी सफलताओं को केवल आंतरिक कारकों पर गुणारोपित करते हैं। मोगध्दाम, डिट्टो एवं टेलर (1990) के एक अध्ययन में पाया गया कि कनाडा में रहने वाली भारतीय महिलाओं ने अपनी सफलताओं और विफलताओं दोनों को आंतरिक कारकों के उपर गुणारोपित किया। मॉरिस और पेंग (1994) ने हत्याओं के बारे में अमेरिकी और चीनी समाचार पत्रों के लेखों की समीक्षा की और पाया कि अमेरिकी समाचार पत्रों ने हत्या के कारण को आरोपी व्यक्ति की आंतरिक विशेषताओं के उपर, जबकि चीनी समाचार पत्रों ने इसे स्थितिजन्य कारकों (जैसे समुदाय से अलग-थलग महसूस करना) पर गुणारोपित किया।

10.5.4 आक्रामकता

आक्रामकता व्यवहार के माध्यम से क्रोध की एक प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है जिसमें अन्य व्यक्ति को शारीरिक या मनोवैज्ञानिक नुकसान पहुंचता है। आनुवंशिक कारकों के अलावा, पर्यावरण और सांस्कृतिक कारकों का किसी संस्कृति में समग्र प्रत्यक्षं, अनुभव और आक्रामकता की अभिव्यक्ति पर प्रभाव पड़ता है। फिनलैंड में, आक्रामकता को कुछ इस तरह देखा जाता है कि कोई व्यक्ति आनंद प्राप्त करने के लिए कुछ करता है, इसलिए, एस्टोनिया की तुलना में इसे अधिक भयावह माना जाता है, जहाँ एक लक्ष्य हासिल करने के लिए आक्रामकता को अधिक सामान्य साधन माना जाता है (तेरव एवं केल्टिकांगस, 1998)। इसके अलावा, हांगकांग (संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना में) में आक्रामकता अधिक सामाजिक रूप से स्वीकार्य और सामान्य है, जब दो लोगों के अधिकार स्तरों में अंतर होता है (बॉन्ड, वान, लेओंग, एवं जियाकोलोन, 1985)।

आक्रामकता पर इस प्रभाव को निर्धारित करने में कई कारक शामिल हैं; उनमें से कुछ नीचे दिए गए हैं (बॉन्ड, 2004):

1) सामूहिकतावादी बनाम व्यक्तिवादी समाज-संस्कृति में व्यक्तिवाद का आर्थिक कारकों के आने से पहले हिंसा में कमी पर प्रबल प्रारंभिक प्रभाव होता है (कारस्टेड, 2001)। इसके अलावा, व्यक्तिवादी समाज आर्थिक रूप से बेहतर करते हैं, जिससे आक्रामकता और हिंसा के पैटर्न को और कम किया जा सकता है। सामूहिक संस्कृतियों में अन्तःसमूह के प्रति वफादार और प्रतिबद्ध होने के सामाजिक दबाव के कारण, वाह्य. समूह के प्रति हिंसा और आक्रामकता की संभावना अधिक हो जाती है (गिदेंस, 1976; इंगलर्ट, 1997)। इसके अलावा, सामूहिक समाजों में महिलाओं के खिलाफ आक्रामकता अधिक है क्योंकि वे अपमानजनक रिश्ते में रहने के लिए अधिक दबाव महसूस करते हैं (वांडेलो एवं कोहेन, 2002)।

2) आर्थिक स्थिति- धनवान समाजों में मानव हत्या की दर कम होती है (लिम एवं अन्य, 2005)। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी देश के धन की तुलना में आर्थिक असमानता, मानव हत्या के दर का बेहतर पूर्वानुमान करती है (कैनेडी, कावाची, एवं प्रोथ्रो-स्टिथ, 1996)। इसलिए, समाज में आक्रामकता और हिंसा को नियंत्रित करने के लिए धन और संसाधनों का समान वितरण महत्वपूर्ण है।

3) युद्ध और अन्य हिंसक राजनीतिक झगड़ों में शामिल होना एक समाज के भीतर तनाव और आक्रामकता का वातावरण बनाता है। वे देश जो द्वितीय विश्व युद्ध में शामिल थे (युद्धक देश), उन देशों की तुलना में जो युद्ध में शामिल नहीं थे, युद्ध समाप्त होने के बाद उनमे उच्चतर आत्महत्या की दर थी, (आर्चर एवं गार्टनर, 1984)। इसलिए, अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष में शामिल होने से देश के आंतरिक कामकाज पर गहरा, नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

4) लोकतांत्रिक बनाम निरंकुश समाज.स्थिर लोकतंत्र वाले देश, युद्ध में भाग लेने के लिए कम उत्सुक होते हैं (रममेल, 1988)। उनके स्वतंत्रता और मानवाधिकारों का सम्मान करने की अधिक संभावना है। यह संस्कृति के भीतर मानव हत्या और आक्रामकता के कारण को प्रतिबंधित करता है।

10.5.5 व्यक्ति-प्रत्यक्षण, आकर्षण और संबंध

व्यक्ति दूसरों के बारे में लगातार दूसरों का मूल्यांकन करता रहता है, जो नई जानकारी और कई अन्य कारकों के अनुसार आकार और संशोधित होता रहता हैं। हम लोगों और उनके व्यवहार का कैसे प्रत्यक्षण करते हैं (व्यक्ति की धारणा), यह प्रत्यक्षित व्यक्ति की आंतरिक

अवस्था के बारे में हमारी अपनी धारणाओं द्वारा आकार लेता है। यद्यपि स्मृति के संदर्भ में, व्यक्ति प्रत्यक्षण में प्राथमिक प्रभाव का उपयोग व्यक्ति का समग्र प्रत्यक्षण करने में दुसरों की प्रथम छवि को अतिआकलन करने की व्यक्तियों की प्रविति (दूसरों से कई बार मिलने के बावजूद) की व्याख्या करने में उपयोग किया जाता है (एंडरसन, 1971)। नोगुची, कामदा, एवं श्रीरा (2013) ने पाया कि अमेरिकी सहभागियों ने जापानी सहभागियों की तुलना में अधिक प्राथमिकता प्रभाव दिखाया। बाद वाले लोगों के व्यवहार की जानकारी के बारे में सूचना देने के लिए अधिक उत्तरदायी थे।

मुखीय पहचान अध्ययनों से संकेत मिलता है कि व्यक्ति दूसरों की तुलना में स्वयं के जातीय लोगों के चेहरे को अधिक सटीक रूप से पहचान सकते हैं (उदाहरण के लिए, एनजी एवं लिंडसे, 1994; बोथबेल, ब्रिघम एवं मालपास, 1989)। इसका एक स्पष्टीकरण अंतरसमूह संपर्क (या इसकी कमी) हो सकता है, व्यक्ति दूसरों की तुलना में अपनी जाति के लोगों के आस-पास अधिक समय बिताते हैं, इसलिए इस नस्ल के चेहरे की विशिष्ट विशिष्ट गुणों का पहचान करना बेहतर होता है।

पारस्परिक आकर्षण, प्रेम और रिश्तों अंतःसांस्कृतिक अनुसंधान में अध्ययन के अन्य दिलचस्प क्षेत्र रहें हैं। क्राउचर, ऑस्टिन, फेंग, एवं होलोदी (2011) ने भारत में हिंदुओं और मुसलमानों के अंतरवैयक्तिक आकर्षण का पता लगाया और पाया कि दोनों समूहों ने दूसरे की तुलना में अपने धार्मिक समूह के लोगो के प्रति अधिक आकर्षण (शारीरिक, सामाजिक और कार्य क्षेत्रों में) प्रदर्शित किया।

टिंग-टुमी (1991) द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और फ्रांस के मध्य प्यार के बारे में अभिवृत्ति की तुलना की गई। यह पाया गया कि जापानी सहभागियों की तुलना में अमेरिकी और फ्रांसीसी सहभागियों द्वारा प्रेम की प्रतिबद्धता और प्रकटन रखरखाव को बहुत अधिक रेटिंग दिया गया था और अमेरिकियों ने जापानी की तुलना में संबंधपरक द्वैधता की रेटिंग ज्यादा किया। फ्रांसीसी विषयों पर जापानी और अमेरिकी प्रतिभागियों द्वारा अंतर्द्वंद अभिव्यक्ति के क्षेत्र को उच्च दर्जा दिया गया था।

यद्यपि, लोग अपने अंतरसमूहों के प्रति आकर्षित होते हैं, हाल में किए गए अधिकांश काम भिन्न संस्कृति के सदस्यों के साथ घनिष्ठ संबंधों को विकसित करने के लाभों को प्रदर्शित करते हैं। उदाहरण के लिए, लू और उनके सहयोगियों (2017) ने रचनात्मकता पर पारस्परिक संबंधों के प्रभाव पर अध्ययन की एक श्रृंखला आयोजित की। गैर-अमेरिकी जिन्होंने जे.1 वीजा के तहत अमेरिका में काम किया था, जो अपने अमेरिकी दोस्तों के साथ संपर्क में रहते थे, वे अधिक अभिनवशील थे और उनके उद्यमी बनने की संभावना अधिक थी। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि अंतरसांस्कृतिक डेटिंग का अनुभव करने वाले लोगों में विशिष्ट अन्तरासांस्कृतिक डेटिंग अनुभव वाले लोगों की तुलना में रचनात्मकता का उच्च स्तर था। इस प्रकार, दीर्घकालिक अंतरसांस्कृतिक मित्रता और अंतरसांस्कृतिक रोमांटिक सम्बन्ध का इतिहास लोगों पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव डालता है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 3

बताएं कि क्या निम्न वाक्य 'सही' हैं या 'गलत':

1) आक्रामकता व्यवहार के माध्यम से क्रोध की एक प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है जिसमे किसी अन्य व्यक्ति को शारीरिक या मनोवैज्ञानिक नुकसान पहुंचाया जाता है। ( )

2) आत्म-सेवी पूर्वाग्रह एक गुणारोपण त्रुटि है जिसमें लोग पीड़ितों को उनकी पीड़ा के लिए दोषी मानते हैं। ( )

3) सामाजिक अस्मिता सिद्धांत (ताजफेल, 1978) इस धारणा पर आधारित है कि सामाजिक समूहों के संबंध में पहचान बनाने से व्यक्ति की स्वयं की पहचान भी मजबूत और संरक्षित होती है। ( )

4) अनुरूपता से तात्पर्य एक सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समूह सदस्यों के एक साथ काम करने की क्षमता से है। ( )

5) हम जिन समूहों से खुद को जोड़ते हैं या महसूस करते हैं उसे 'वाह्य समूह' कहते हैं। ( )

10.6 सारांश

संस्कृति इस बात का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है कि हमारे जीवन के दौरान हमारे प्रत्यक्षण, दृष्टिकोण और व्यवहार कैसे आकार लेते हैं और परिवर्तित होते हैं। कुछ एजेंट जो हमारे एनकल्चरेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वे हैं तत्काल परिवार, विस्तारित परिवार, दोस्त, शिक्षा और धर्म। अलग.अलग संस्कृतियों में उनकी भूमिकाएँ अलग-अलग होती हैं, जो व्यक्ति के भाव के कन्स्ट्रुअल को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करती है, और सामूहिकवादी संस्कृतियों में, जो समूह के सामंजस्य और उसके भीतर उपयुक्त होने पर ध्यान केंद्रित करती हैं। संस्कृति के प्रकार के अनुसार एक को उपर लाया जाता है, वे आम तौर पर ज्यादा मूल्यवान और सामाजिक रूप से उचित होती हैं। किसी के पास कई सांस्कृतिक पहचान हो सकती हैं, जहां स्थिति के अनुसार कोई भी दूसरों के प्रति शांत हो जाता है। हालाँकि, अन्तःसमूह पहचान का नुकसान अन्तःसमूह पक्षपात हो सकता है, जो हमें इंटरग्रुप कॉन्टैक्ट के जरिए हमारे जगत के प्रति दृष्टिकोण का विस्तार करने से रोक सकता है और पूर्वाग्रहों और भेदभावपूर्ण व्यवहारों को भी प्रभावित कर सकता है। सांस्कृतिक मतभेदों को देखते हुए, कई समानताओं पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, सांस्कृतिक अंतर पदानुक्रमित नहीं होते, अर्थात, वे अनिवार्य रूप से एक संस्कृति को दूसरे पर बेहतर नहीं बना सकते हैं।

10.7 इकाई के अंत में पूछे जाने वाले प्रश्न

1) एनकल्चरेशन की प्रकृति और अर्थ को स्पष्ट करें और इसका अकल्चरेशन से अंतर स्पष्ट करें।

2) किसी व्यक्ति को समाज के लिए एनकल्चरेट के लिए जिम्मेदार प्रमुख एजेंटों को समझाएं।

3) उदाहरण के साथ, विभिन्न संस्कृतियों में तात्कालिक और विस्तारित परिवार के साथ-साथ साथी संबंधों की भूमिका का एनकल्चरेशन में उल्लेख कीजिए ।

4) शिक्षा और धर्म के क्या कार्य हैं। वे व्यक्तियों के समाजीकरण को कैसे प्रभावित करते हैं।

5) व्यक्ति और सामूहिक संस्कृति में स्वयं की भावना कैसे बदलती है। व्यक्तिवादी और स्वयं के सामूहिक दृष्टिकोण के लिए भावनात्मक, संज्ञानात्मक और प्रेरक परिणामों का भी वर्णन करें।

6) बहुसांस्कृतिक अस्मिता से आप क्या समझते हैं। अंतर-वैयक्तिक, अंतरा-वैयक्तिक, और सामूहिक स्तरों पर इसकी गतिशीलता की व्याख्या करें।

7) समूह सदस्यता की गतिशीलता में अंतर-सांस्कृतिक अंतर का वर्णन करें।

8) गुणारोपण, आक्रामकता, व्यक्ति प्रत्यक्षण और करीबी रिश्तों के संदर्भ में सांस्कृतिक अंतर को स्पष्ट करें।

10.8 शब्दावली

अकल्चरेशन : उस व्यक्ति से भिन्न संस्कृति को अपनाना, जिसमें वह व्यक्ति मूल रूप से जुड़ा हुआ था।

आक्रामकता : व्यवहार के माध्यम से क्रोध की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति जो किसी अन्य व्यक्ति को शारीरिक या मनोवैज्ञानिक नुकसान पहुंचाता है।

गुणारोपण : किसी विशेष घटना या व्यवहार का कारण/स्पष्टीकरण जिसे किसी अन्य व्यक्ति या स्थितिजन्य कारकों द्वारा नियंत्रित किए जाने के लिए मूल्यांकन निर्णय।

सह-नींद : जब छोटे बच्चे और उनके माता-पिता एक ही कमरे में सोते हैं।

सामूहिकता : राजनीतिक या सांस्कृतिक विचारधारा जो समूह के साथ अन्योन्याश्रित स्व और फिटिंग पर केंद्रित है।

अनुपालन : स्पष्ट रूप से (सार्वजनिक रूप से व्यक्त व्यवहार में) सामाजिक दबाव का पालन करना, हालांकि निजी विश्वास अपरिवर्तित रह सकते हैं।

अनुरूपता : वास्तविक या कथित सामाजिक दबाव का पालन करना।

सहयोग : एक सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समूह के सदस्यों की एक साथ काम करने की क्षमता।

संस्कृति : मानव जनसँख्या द्वारा बनाए गए समतुल्य और पूरक सीखे गए अर्थों की समग्रता, या आबादी के पहचाने जाने योग्य क्षेत्रों द्वारा, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रेषित की जाती है ।

रक्षात्मक गुणारोपण : पीड़ितों को उनकी पीड़ा के लिए दोषी ठहराने की प्रवृत्ति।

एनकल्चरेशन : संस्कृति की विभिन्न एजेंसियों द्वारा हमारी अपनी संस्कृति के पहलुओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाना।

फासीवाद : एक लोकतंत्र विरोधी राजनीतिक विचारधारा जो चरम राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित करती है, वाह्य-समूह के व्यक्तियों को मौलिक अधिकारों से वंचित करती है या उन्हें विचलनकारी माना जाता है।

मूलभूत गुणारोपण त्रुटि : दूसरों के व्यवहार को आंतरिक कारकों के पर गुणारोपण करने की प्रवृत्ति।

समूह आशक्ति चिंता : अंतः समूह में स्वीकार नहीं किए जाने की असुरक्षा।

समूह आशक्ति से बचाव : अंतः समूह पर निर्भर रहने से बचना ।

विषम जातीय मित्रता : स्वयं से भिन्न जातीय समूहों से संबंधित समकक्षियों के साथ दोस्ती।

सम जातीय मित्रता : खुद की जातीयता के समकक्षियो के साथ दोस्ती।

पहचान पुनर्परिभाषा : लक्षित अस्मिता के सकारात्मक गुणों को भुनाना ताकि सकारात्मक संघों का निर्माण हो और उक्त पहचान के बारे में बेहतर महसूस हो।

अस्मिता बदलाव : कम असुरक्षित या अधिक सकारात्मक रूप से देखी जाने वाली पहचान की तरफ बदलाव।

व्यक्तिवाद : राजनीतिक या सांस्कृतिक विचारधारा जो स्वतंत्र स्व पर बल एवं समूह से अलग दिखती है।

अन्तःसमूह : वह समूह जिसके साथ हम खुद को जोड़ते हैं एवं उससे जुड़ाव महसूस करते हैं।

अन्तः समूह पक्षपात/ अंतर-समूह पक्षपात/ इन-ग्रुप फेबरिटिज्म : अन्तः समूह का पक्ष लेने तथा वाह्य-समूह का विरोध करने की प्रवृत्ति।

इन-ग्रुप पहचान : अपने अन्तः समूह में जुड़ाव की भावना।

इन-ग्रुप इन्वेस्टमेंट : व्यक्तिगत लाभ से परे जाकर समूह के लाभ के लिए व्यवहार करना।

अंतर-सांस्कृतिक नीतियांः ऐसी नीतियां जो अंतर-सांस्कृतिक अनावरण से प्रभावित अपनी संस्कृतिक अस्मिता के रूप में अंतर-सांस्कृतिक संपर्क और नम्यता को प्रोत्साहित करती हैं।

न्याय संगत विश्व परिकल्पनाः एक संज्ञानात्मक भ्रान्ति कि दुनिया निष्पक्ष है और अच्छे लोगों को पुरस्कृत किया जाता है, जबकि केवल बुरे लोगों को ही दंडित किया जाता है।

बहुसांस्कृतिक पहचान : एक या एक से अधिक पहचान या संस्कृति से संबंधित या पहचान।

बहुसंस्कृतिवादी नीतियां : ऐसी नीतियां जो परंपराओं और समुदायों से संबंधित अपने मूल सार में कई संस्कृतियों के संरक्षण पर जोर देती हैं ।

आज्ञाकारिता : किसी प्राधिकरी से कुछ प्रत्यक्ष निर्देशों या आदेशों का पालन करन की प्रवित्ति।

वाह्य ग्रुप : समूह जिससे हम खुद को नहीं जोड़ पाते अथवा जिसके साथ जुड़ाव नहीं महसूस होता।

व्यक्ति प्रत्यक्षण : दूसरे के बारे में छवि बनाना तथा लोगों और उनके व्यवहारों के बारे में मानसिक अभ्यावेदन के साथ अंतर्क्रिया करना।

प्राथमिकता प्रभाव : किसी व्यक्ति के बारे में समग्र प्रत्यक्षण करते समय प्रथम छवि को अत्यधिक महत्व देने की प्रवित्ति।

पुनर्वर्गीकरण : छोटे अन्तःसमूहों को एक बड़े समूह में विलय करके पुनर्परिभाषित करना।

आत्म-सेवी पूर्वाग्रह : स्वयं के व्यवहार को वाह्य कारकों पर गुणारोपित करने की प्रवृत्ति।

10.9 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 1

1) व्यक्तियों का समूह
2) अपनाता है और कई मामलों में एक अलग संस्कृति को अपनाता है ।
3) इन्कलचरेशन
4) संस्कृति
5) माता-पिता

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 2

1) समूहवादी
2) सामाजिक स्पष्टीकरण
3) व्यक्तिगत संस्कृतियाँ
4) अंतरसंस्कृतिवाद
5) समूहवादी

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 3

1) सत्य
2) असत्य
3) सत्य
4) असत्य
5) असत्य

10.10 सुझाये गये पठन एवं सन्दर्भ

आकर, जे. एल., एव विल्लियम्स, पी. (1998). एम्पथीवर्सेसप्राइड : दइन्फ्लुएंस ऑफइमोशनल अपील्स अक्रॉसकल्चर्स। जर्नल ऑफ रेजर्स, 25(3), 241-261.

ऐंसवर्थ, एम., ब्लेहर, एम., वाटर्स, इ., एवंवाल, एस. (197). पैटर्न्सअटैचमेंटः असाइकोलॉजिकल स्टडी ऑफ द स्ट्रेंजसिचुएशन। हिल्सडेल, एनजेः अर्लबाम।

अख्तर, एस. (2009). फ्रेंडशिप, सोशलाईजेसन, एंड द इमिग्रेंट एक्सपीरियंस। साइकोएनालिसिस, कल्चर एंड सोसाइटी, 14(3), 253-272.

अल.हस्सानी, एस. टी. एस. (2011). 1001 इन्वेंशंसः मुस्लिम हेरिटेज इन आवरवर्ल्ड। फाउंडेशन फॉर साइंस, टेक्नोलॉजी, एंड सिविलाइजेशन लिमिटेड।

आर्चर, डी., एवं गार्टनर, आर. (1984). वायलेंस एंड क्राइम इन क्रॉस.नेशनल पर्सपेक्टिव। न्यूहैवन, सीटीः येल यूनिवर्सिटी प्रेस।

एंडरसन, एन. एच. (1971). इंटीग्रेशन थ्योरी एंड ऐटिटूड चेंज। साइकोलॉजिकल रिव्यु, 78, 171-206.

बॉमरिंड, डी. (1967). चाइल्ड केयर प्रैक्टिसेज एनटिसिडिंग थ्री पैटर्न्स ऑफ प्रीस्कूल बिहैवियर। जेनेटिक साइकोलॉजी मोनोग्राफ्स, 75, 43-88.

बॉमरिंड, डी. (1971). करंट पैटर्न्स ऑफ पैरेंटल अथॉरिटी। डेवलपमेंटल साइकोलॉजी मोनोग्राफ्स, 4 (नंबर1, पॉइंट 2),

बेर्री, जे.डब्ल्यू., पूरटिन्गा, वाई, एच., सेगल, एम. एच., एंड दसेन, पी. आर. (1992). क्रॉस-कल्चरल साइकोलॉजीः रिसर्च एंड एप्लीकेशन। न्यूयोर्कः कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

बर्नस्टीन, एम. जे. (2015). इनग्रुप्स एंड आउटग्रुप्स। डीवायली ब्लैकवेल इन साइक्लोपीडिया ऑफ रेस. एथनिसिटी, एंड नेशनलिस्म, 1-3.

ब्लैक, एस. (2002), व्हेन स्टूडेंट्स पुष पास्टपीअरइन्फ्लुएंस। द एजुकेशन डाइजेस्ट, 68, 31-36.

बांड, एम, एच., वान, के. सी., लेओंग, के., एवंजिआसलोन, आर. ए. (1985). हाउ आर रेस्पॉन्सेस टू इंसल्ट रिलेटेड टू कल्चरल कलेक्टिविज्म एंड पावर डिस्टेंस, जर्नल ऑफ क्रॉस-कल्चरल साइकोलॉजी, 16(1), 111-127.

बांड, एम, एच. (2004). कल्चर एंड अग्रेशन-फ्रॉम कॉन्टेक्स्ट टू कोएरसन. पर्सनालिटी एंड सोशल साइकोलॉजी रिव्यु, 8 (1), 62-78.

बोरप, जे., एवं आहलिन, ए. (2011). रिलिजन एंड कल्चरल इंटीग्रेशन नार्डिक जर्नल ऑफ माइग्रेशन रिसर्च, 1 (3).

बॉथवेल, आर. के., ब्रिंघम, जे. सी., एंड मलपास, आर. एस. (1989). क्रॉस रेसियल आइडेंटिफिकेशन. पर्सनालिटी एंड सोशल साइकोलॉजी बुलेटिन, 15 (1), 19-25.

ब्रेडले, जी.डव्ल्यू. (1978). सेल्फ-सर्विंग बायस इन द एट्रीब्यूशन प्रोसेसः अरी.एग्जामिनेशन ऑफ द फैक्ट आर फिक्शन क्वेश्चन. जर्नल ऑफ पर्सनालिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 35, 56-71.

ब्रॉन, ए. (2017, जून 26). दवन्स. कॉमन प्रैक्टिस ऑफ कम्युनल स्लीपिंग.

ब्राउन, आर. जे., एंड वेड, जी. (1987). सुपर ऑर्डिनेट गोल्स एंड इंटरग्रुप बिहैवियर. द इफेक्ट ऑफ रोल अम्बिगुइटी एंड स्टेटस ऑन इंटरग्रुप ऐटिटूड्स एंड टास्क परफॉरमेंस. यूरोपियन जर्नल ऑफ सोशल साइकोलॉजी, 17, 131-142.

केज, डब्ल्यू., एंड हॉवर्ड, इ. इ. (2007). इमीग्रेशन एंड रिलिजन. एनुअल रिव्यु ऑफ सोशियोलॉजी, 33 (1), 359-379.

कास्त्रोजिओवान्नी, डी. (2002). अडोलेसेन्सः पीयर ग्रुप्स.

चाओ, आर. के. (1994).बियॉन्ड पैरेंटल कण्ट्रोल एंड ऑथॉरिटेरियन पेरेंटिंग स्टाइलः अंडरस्टैंडिंग चायनीज पेरेंटिंग थ्रू द कल्चरल नोशन ऑफ ट्रेनिंग. चाइल्ड डेवलपमेंट, 65, 1111-1119.

कम्पैरे, जी., एंड पायने, डब्ल्यू. एच. (1899). द हिस्ट्री ऑफ पेडगोगी. बोस्टनः डी सी हीथ एंड कंपनी.

कॉनरोय, एम., हेस, डी. आर., आजूमा, एच., एंड कासिवागी, के. (1980).मैटरनल स्ट्रेटेजी फॉर रेगुलेटिंग चिल्ड्रेन्स बिहैवियर. जर्नल ऑफ कल्चरल साइकोलॉजी, 11 (2), 153-172.

क्रोचेर, एस. एम., ऑस्टिन, एम., फांग, एल., एंड होलोडी, के. जे. (2011). इंटरपर्सनल अट्रैक्शन एंड रिलीजियस आइडेंटिफिकेशनः अ कम्पेरेटिव एनालिसिस ऑफ मुस्लिम्स एंड हिंदूस इन इंडिया. एशियाई जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन, 21 (6), 564-574.

देसाई, एस. (1995). व्हेन आर चिल्ड्रन फ्रॉम लार्ज फेमिलीज डिस.एडवानटेज्ड एविडेंस फ्रॉम क्रॉस.नेशनल एनालिसिस. पापुलेशन स्टडीज, 49 (2), 195-210.

डी.मार्को, टी. सी., एंड न्यूहेसर, ए. के. (2018). अटैचमेंट टू ग्रुप्सः रिलेशनशिप्स विथ ग्रुप एस्टीम, सेल्फ.एस्टीम, एंड इन्वेस्टमेंट इन ग्रुप्स. यूरोपियन जर्नल ऑफ सोशल साइकोलॉजी.

डेवी. जे. (1899). द स्कूल एंड द सोसाइटीः बीइंग थ्री लेक्चर्स. शिकागोः द यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.

डेवी. जे. (1916).डेमोक्रेसी एंड एजुकेशनः एन इंट्रोडक्शन टू द फिलॉसोफी ऑफ एजुकेशन. न्यूयोर्कः मैकमिलन.

धवन, एन., रोजमैन, आई. जे., नायडू, आर. के., कोमिला, टी., एंड रेटेक, एस. आई. (1995). जर्नल ऑफ क्रॉस.कल्चरल साइकोलॉजी, 26 (6), 606-621.

डोई, टी. (1973).द एनाटोमी ऑफ डिपेंडेंस. टोक्योः कोडनशा.

दोसांझ, जे. एस., एंड घुमन, पी, ए, एस. (1996), द कल्चरल कॉन्टेक्स्ट ऑफ चाइल्ड रेअरिंगः अस्टडी ऑफ इंडिजेनस एंड ब्रिटिश पंजाबीज. अर्ली चाइल्ड डेवलपमेंट एंड केयर, 126, 39-55.

अर्न्स्ट, सी. एंड एंग्स्ट, जे. (1983), बर्थआर्डर. न्यूयोर्कः स्प्रिंगर.वरलाग.

फ्रोनेर, सी., एंड अल्बा, जे. (2008), इमीग्रेशन रिलिजन इन द यू. एस. एंड वेस्टर्न यूरोपः ब्रिज आर बैरियर टू इन्क्लूजन. इंटरनेशनल माइग्रेशन रिव्यु, 42, 360-392.

गैर्टनर, एस. एल., मन्न, जे. ए., डोविडिओ, जे. एफ., मयूरेल, ए. जे., एंड पोमारे, एम. (1990). हाउ डज कोऑपरेशन रीड्यूस इंटरग्रूप बायस. जर्नल ऑफ पर्सनालिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 59, 692-704.

घोष, आर. (1983). सारीस एंड द मेपल लीफः इंडियन वीमेन इन कनाडा. इन कुरियन, जी. , एंडश्रीवास्तव, आर. पी. (1983). ओवरसीज इंडियंसः अ स्टडी इन अडॉप्टेशन (पीपी 90-99). न्यू दिल्ली.

गुप्ता, ए. (2007). गोइंग टू स्कूल इन साउथ एशिया. वेस्टपोर्ट, सीटीः ग्रीनवुड पब्लिशिंग ग्रुप.

गुटिएर्रेज, ए. एस., एंड उन्जुएटा, एम. एम. (2010). द इफेक्ट ऑफ इंटर एथनिक आईडिओलजीज ऑन द लाइकबिलिटी ऑफ स्टीरियोटिपिक वर्सेस काउंटर स्टीरियोटिपिक माइनॉरिटी टार्गेट्स. जर्नल ऑफ सोशलसाइकोलॉजी. 46 (5), 775-784.

हाइडर, एफ. (1958) द साइकोलॉजी ऑफ इंटरपर्सनल रिलेशन्स. न्यूयॉर्कः वाईली.

इस्साक, आर., एनी, आई. के., एंड प्रशांत, एच. आर. (एन.डी.). पेरेंटिंग इन इंडिया. इन एच. सेलिन. (इडी.), पेरेंटिंग अक्रॉस कल्चर्स, वॉल्यूम 7, (पृ. 39-45), स्प्रिंगर नेदरलैंड्स)।

ग्रेसिआ कोल, सी. टी., सेप्कोस्की, सी., एंड लेस्टर, बी. एम. (1981). कल्चरल एंड बायोमेडिकल कोरिलेट्स ऑफ निओनेटल बिहैवियर. डेवलपमेंटल साइकोबायोलॉजी, 14, 147-154.

गेयरी, दी. सी. (1996). इंटरनेशनल डिफरेंसेस इन मैथमेटिकल अचीवमेंटः देयर नेचर, कॉजेज, कानसीकुएंसेज. करंट डायरेक्शंस इन साइकोलॉजिकल साइंस, 5 (5), 133-137.

गिड्डेन्स, ए. (1976). क्लासिकल सोशियोलॉजिकल थ्योरी एंड द ओरिजिन्स ऑफ मॉडर्न सोशियोलॉजी. अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, 81, 703-729.

गुडीकुन्स्ट, डब्ल्यू. बी., यून, वाई., एंड निशिदा, टी. (1987), द इन्फ्लुएंस ऑफ इंडिवीडुअलिस्म. कलेक्टिविज्म ऑन पर्सेप्शन्स ऑफ कम्युनिकेशन इन ग्रुप एंड आउटग्रुप रिलेशनशिप्स. कम्युनिकेशन मोनोग्राफ्स, 54 (3), 295-306.

हनीश, एल. डी., एंड फेबस, आर. ए. (2014). पिअर सोशलाईजेसन ऑफ जेंडर इन यंग बॉयज एंड गर्ल्स. इन ट्रेम्ब्ले, आर. इ., बॉयविन, एम., पीटर्स, आर. डी. (इडी.) इनसाइक्लोपीडिया ऑन अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंट.

हिक्की, एम. जी. (2006). एशियन इंडियन फेमिली सोशलाईजेसन पैटर्न्स एंड इम्प्लिकेशन्स फॉर अमेरिकन स्कूलिंग. इन सी. सी. पार्क, ए. एल. गुडविन, एवंएस. जे. ली (इडी.). एशियन एंड पसिफिक अमेरिकन एजुकेशनः लर्निंग, सोशलाईजेसन एंड आइडेंटिटी, (पृ. 93-219), चारलोटे, एनसीः इनफार्मेशन एज.

हिर्ष, जे. बी., एंड कांग, एस. के. (2016), मेकेनिज्म ऑफ आइडेंटिटी कनफ्लिक्टः अनसर्टेनिटी, एंजाइटी, एंड द बिहैवियरल इन्हिबीशन सिस्टम. पर्सनालिटी एंड सोशल साइकोलॉजी रिव्यु, 20 (3), 223-244.

अल-हस्सानी, एस. टी. एस. (2001). कल्चर्स कानसिक्वेंसेजः कमपेयरिंग वैल्यूज, बिहैवियर्स, इंस्टीटूशन्स, एंड ओर्गनइजेशन्स अक्रॉस नेशंस. द्वितीय संस्करण. थाउजेंड ओक्स, सीएः सेज.

होन्ग, वाई., झान, एस., मोरिस, एम. डब्ल्यू., एंड बेनेट.मार्टिनेज, वी. (2016), मल्टीकल्चरल आइडेंटिटी प्रोसेसेज. करंट ओपिनियन इन साइकोलॉजी, 8, 49-53.

हूर्न, ए. वी. (2014), इन्डिविडुअलिस्ट.कलेक्टिविस्ट कल्चर एंड ट्रस्ट रेडियस. जर्नल ऑफ क्रॉस-कल्चरल साइकोलॉजी, 46 (2), 269-276.

हॉर्नसे, एम. जे., एंड हॉग, एम. ए. (2000). सब ग्रुप रिलेशन्सः अ कंपरिजन ऑफ म्यूच्यूअल इंटरग्रूप डिफ्रेंषिएशन एंड कॉमन इनग्रुप आइडेंटिटी मॉडल्स ऑफ प्रीजुडिस रिडक्शन. पर्सनालिटी एंड सोशल साइकोलॉजी बुलेटिन, 26, 242-256.

होवार्ड, एन. एम. (2004). पिअर इन्फ्लुएंस इन रिलेशन टू एकेडमिक परफॉरमेंस सोशलाइजेशन अमंग एडोलैसैंट्सः अ लिटरेचर रिव्यु, 6.

इंग्लेहार्ट, आर. (1997). मॉडर्नाइजेशन एंड पोस्टमॉडर्नाइजेशनः कल्चरल, इकनोमिक, एंड पोलिटिकल चेंज इन 43 सोसाइटीज. प्रिंसटन, एनजेः प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.

इस्लाम. जी. (2014). सोशल आइडेंटिटी थ्योरी. इन टी. टिओ (इडी). क्रिटिकल साइकोलॉजी एंड बिजनेस एथिक्स (पृ. 1781-1783), न्यूयोर्क, एनवाईः स्प्रिंगर. वरलाग.

जहोदा, जी. (1984). डू वी नीड ए कांसेप्ट ऑफ कल्चर. जर्नल ऑफ क्रॉस. कल्चरल साइकोलॉजी, 15 (2), 139-151.

जमातिआ, एफ., एंड गुन्डीमेडा, एन. (2019). एथनिक आइडेंटिटी एंड करिकुलम कंस्ट्रक्शनः क्रिटिकल रिफ्लेक्शन ऑन स्कूल करिकुलम इन त्रिपुरा. एसियन एथनिसिटी, 1-18.

झा, एस. डी., एंड सिंह, के. (2011). एन एनालिसिस ऑफ इंडिवीडुअलिस्म.कलेक्टिविज्म अक्रॉस नॉदर्न इंडिया. जर्नल ऑफ द इंडियन एकेडमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी, 37 (1), 149.156.

जोन्स, ई. ई., एंड निस्बेट, आर. ई. (1971). द एक्टर एंड द आब्जर्वरः डाईवर्जेंट पर्सेप्शन्स ऑफ द कॉजेज ऑफ बिहेवियर. इन ई. ई. जोन्स, डी. ई. कानास, एच. एच., केली, आर. ई., निस्बेट, एस. वालिन्स, एंड बी. वाइनर (ईडीएस), एट्रीब्यूशनः परसीविंग द कॉजेज ऑफ बिहेवियर (पीपी 79-94): मॉरिसटाउन, एनजेः जनरल लर्निंग प्रेस.

जोशी, एस. एम., एंड मैकलेन, एम. (1997).0 मैटरनल एक्सपैक्सटेशन्स ऑफ चाइल्ड डेवेलपमेंट इन इंडिया, जापान, एंड इंग्लैंड. जर्नल ऑफ क्रॉस.कल्चरल साइकोलॉजी, 28 (2), 219-234.

कमल, जेड, एंड लोवेंटल, के. एम. (2002). सुसाइड बिलीफ्स एंड बिहेवियर अमंग यंग मुस्लिम्स एंड इंडियंस इन थे यूके. मेन्टल हेल्थ, रिलिजन एंड कल्चर, 5 (2), 111-118.

कारस्टेड, एस. (2001). डाई मोरालिसे स्टीरके स्केवचेर बिंदून्गेन. इंडिविजुअलिज्म एण्ड ग्वाल्ट इम कुल्तुरवेलिग्च (द मोरल स्ट्रेंथ ऑफ वीक टाइजः ए क्रॉस-कल्चरल एनालिसिस ऑफ इंडिविजुअलिज्म एंड वायलेंस), मोनात्स्क्रफ्टफुअर क्रिमिनोलोगी उण्ड स्ट्राफ्रेक्ट्सफॉर्म, 84, 226-243.

कर्वे, आई. (1965). किनशिप आर्गेनाइजेशन इन इंडिया (दूसरा संस्करण). बॉम्बेः एशिया पब्लिशिंग हाउस.

कैनेडी, बी.पी., कावाची, आई., एंड प्रोथ्रो-स्टिथ, डी. (1996). इनकम डिस्ट्रीब्यूशन एंड मोरालिटीः क्रॉस. सेक्शनल इकोलॉजिकल स्टडी ऑफ द रोबिन हुड इन द यूनाइटेड स्टेट्स. ब्रिटिश मेडिकल जर्नल, 312, 1004-1007.

किम, यू. (1992). द पैरेंट.चाइल्ड रिलेशनशिपः द कोर ऑफ कोरियन कलेक्टिविज्म. अनपब्लिसड मैनुस्क्रिप्ट, डिपार्टमेंट ऑफ साइकोलॉजी, यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई, होनेलोलु.

कीतायमा, एस., मार्कस., एच. आर., कुरोकावा, एम., एंड नेगिषी, के. (1993). सोशल ओरिएंटेशन ऑफ इमोशंसः क्रॉस कल्चरल एविडेंस एंड इम्प्लिकेशन्स. अनपब्लिश्ड, यूनिवर्सिटी ऑफ ओरेगॉन.

लेविन, आर. ए. (1977). चाइल्ड रेअरिंग एंड कल्चरल अडॉप्टेशन. इन पी. एच. लीडरमैन, एस. आर. टुलकिन एवं ए. रोसेनफेल्ड. (ईडीएस.), कल्चर एंड इनफैंसी (पृ. 15-27), न्यूयॉर्कः अकेडमिक प्रेस.

लेविन, आर.ए., लेविन, एस. ई., डिक्सन, एस., रिचमैन, ए., लीडरमैन, पी.एच., एंड कीफर, सी. (1996), चाइल्ड केयर एंड कल्चरः लेसंस फ्रॉम अफ्रीका. कैम्ब्रिज, यूकेः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

लिम, एफ., बॉन्ड, एम. एच., एंड बॉन्ड, एम. के. (2005). लिंकिंग सोसाइटल एंड साइकोलॉजिकल फैक्टर्स टू होमिसाइड रेट्स अक्रॉस नेशंस. क्रॉस.कल्चरल साइकोलॉजी जर्नल, 36 (5), 515-536.

लू, जे. जी., हेफेनब्रेक, ए. सी., ईस्टविक, पी. डब्ल्यू., वांग, डी. जे., मेडडक्स, डब्ल्यू. डब्ल्यू, एंड गैलिंस्की, ए. डी. (2017). ''गोइंग आउट'' ऑफ द बॉक्सः क्लोज इंटरकल्चरल फ्रेंडशिप्स एंड रोमांटिक रिलेशनशिप स्पार्क क्रिएटिविटी, वर्कप्लेस इनोवेशन, एंड एंटरप्रेन्योरशिप. एप्लाइड साइकोलॉजी जर्नल, 102 (7), 1091-1108.

मैककोबी, ई. ई., एंड मार्टिन, जे. ए. (1983). सोशलाइजशन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ द फॅमिली. इन ई.एम. हेथरिंगटन (एड.), हैंडबुक ऑफ चाइल्ड साइकोलॉजीः वॉल्यूम 4, सोशलाइजेसन, पर्सनालिटी, एंड सोशल डेवलपमेंट (चतुर्थ संस्करण, पृ. 1-101), न्यूयॉर्कः वायली.

मार्कस, एच. आर., एंड किटायमा, एस. (1991 बी). कल्चर एंड द सेल्फः इम्प्लिकेशन्स फॉर कॉग्निशन, इमोशन, एंड मोटिवेशन. साइकोलॉजिकल रिव्यू, 98, 224-253.

मास्लो, ए. एच. (1968), टुवर्ड्स अ साइकोलॉजी ऑफ बीइंग. न्यूयॉर्कः वान नॉस्ट्रैंड.

माथुर, एम. (2009), सोशलाइसेशन ऑफ स्ट्रीट चिल्ड्रन इन इंडियाः ए सोसिओ इकनोमिक प्रोफाइल. साइकोलॉजी एंड डेवलपिंग सोसाइटीज, 21 (2), 299-325.

मैकएवॉय, एम., ली, सी., ओ 'नील, ए., ग्रोइसमैन, ए., रॉबर्ट्स.बुटेलमैन, के., डिंगहरा, के. एंड पोडर, के. (2005). आर देअर यूनिवर्सल पेरेंटिंग कॉन्सेप्ट्स अमंग कल्चरली डाइवर्स फेमिलीज इन ए इनर सिटी पीडियाट्रिक क्लिनिक. जर्नल ऑफ पीडियाट्रिक हेल्थ केयर, 19 (3), 142-150.

मिलर, जे. जी. (1984).कल्चर एंड द डेवलपमेंट ऑफ एवरीडे सोशल एक्सप्लनेशन. जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 46. 961-978.

मिस्त्री, जे., कॉन्ट्रेरास, एम. एम. एंड पुफाल.जोन्स, ई. (2014). चाइल्डहुड सोशलाईजेशन एंड अकेडमिक परफॉरमेंस ऑफ बाई-कल्चरल युथ. इन वी.बेनेट-मार्टिनेज एवं वाई. वाई. हॉन्ग (इडीएस.), ऑक्सफोर्ड लाइब्रेरी ऑफ साइकोलॉजी. द ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ मल्टीकल्चरल आइडेंटिटी (पृ. 355-378). न्यूयॉर्क, एनवाई, यूएसः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

मिउरा, आई. टी., ओकामोटो, वाई., किम, सी. सी., स्टीयर, एम., एंड अदर्स (1993). फर्स्ट ग्रेडर्स कॉग्निटिव रिप्रजेंटेशन ऑफ नंबर एंड अंडरस्टैंडिंग ऑफ प्लेस वैल्यू. क्रॉस-नेशनल कपरिशंसः फ्रांस, जापान, कोरिया, स्वीडन, एंड द यूनाइटेड स्टेट्स. जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 85 (1), 24-30.

मोगददाम, एफ.एम., डिट्टो, बी., एंड टेलर, डी. एम. (1990). एटीट्यूड्स एंड एट्रीब्यूशंस रिलेटेड टू साइकोलॉजिकल सिम्पटमोलॉजी इन इंडियन इमिग्रां वीमेन. जर्नल ऑफ क्रॉस. कल्चरल साइकोलॉजी, 21, 335-350.

मॉरिस, एम. डब्ल्यू., एंड पेंग, के. (1994). कल्चर एंड कॉजः अमेरिकन एंड चाइनीज एट्रिब्यूशन फॉर सोशल एंड फिजिकल इवेंट्स. जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 67 (6), 949-971.

मॉरिस, एम. डब्ल्यू., चिउ, सी., एंड लियू, जेड. (2015). पालीकल्चरल साइकोलॉजी. एनुअल रिव्यु ऑफ साइकोलॉजी, 66 (1), 631-659.

एनजी, डब्ल्यू. जी., एंड लिंडसे, आर. एल. (1994). क्रॉस.रेस फेसिअल रिकग्निशनः फेल्योर ऑफ द कांटेक्ट हाइपोथिसिस. क्रॉस.कल्चरल साइकोलॉजी जर्नल, 25 (2), 217-232.

नोगुची, के., कामदा, ए., एंड श्रीरा, आई. (2013). कल्चरल डिफरेंसेस इन द प्राइमेसी इफेक्ट फॉर पर्सन परसेप्शन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोलॉजी.

ओगारकोवा, ए., सोरियानो, सी., एंड ग्लैडकोवा, ए. एन. (2016). मेथोडोलॉजिकल ट्रान्गुलेशन इन द स्टडी ऑफ इमोशन द केस ऑफ एंगर इन थ्री लैंग्वेज ग्रुप्स. रिव्यु ऑफ कॉग्निटिव लिंग्विस्टिक्स, 14 (1) 73-101.

ओकोंकवो, आर. (1997), मोरल डेवलपमेंट एंड कल्चर इन कोहलबर्ग 'स थ्योरीः अ नाइजीरियाई (आईजीबीओ) एविडेंस. आई एफ टी साइकोलॉजिआः एन इंटरनेशनल जर्नल, 5 (2), 117-128.

आउटलुक वेब ब्यूरो (2018, 27अप्रैल). पीपल बीहेव देमसेल्वस अब्रोड, बट वन्स इन इंडिया दे स्पिट ऑन, लिटर पब्लिक प्लेसेसः नई एसडीएमसी मेयर. आउटलुक.

पेप्स, एफ., वॉकर, एम., ट्रिम्बोली, ए., एंड ट्रिम्बोली, सी. (1995). पैरेंटल डिसिप्लिन इन एंग्लो, ग्रीक, लेबनीज एंड वियतनामिज कल्चर्स. जर्नल ऑफ क्रॉस.कल्चरल साइकोलॉजी, 26 (1), 49-64.

पेल्टो, पी. जे. (1968, अप्रैल). द डिफरेंस बिटवीन टाइट एंड लूज सोसाइटीज. ट्रांस.एक्शन, पीपी. 37-40.

पीटर्स, एम. ए. (2018). द रिटर्न ऑफ फासिज्मः यूथ, वायलेंस, एंड नेशनलिस्म. एजुकेशनल फिलोसोफी एंड थ्योरी, 1-5.

फैलेट, के., एंड क्लेयस, डब्ल्यू. (1993). अ कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ तुर्किष एंड बेल्जियन युथ. जर्नल ऑफ क्रॉस.कल्चरल साइकोलॉजी, 24, 319-343.

रिट्ज, जे. जी., ब्रेटन, आर., डायोन, के. के., एंड डायोन, के. एल. (2009). मल्टीकल्चरलिस्म एंड सोशल कोहेसनः पोटेनटिअल्स एंड चौलेंजेज ऑफ डाइवर्सिटी. लंदनः स्प्रिंगर.

रोहनर, आर. पी. (1984). टुवर्ड अ कन्सेप्शन ऑफ कल्चर फॉर क्रॉस कल्चरल साइकोलॉजी. जर्नल ऑफ क्रॉस.कल्चरल साइकोलॉजी, 15, 111-138.

रोनेर, आर. पी., एंड पेटेंगेंगिल, एस. एम. (1985). परसीव्ड पैरेंटल एक्सेप्टेन्स.रिजेक्शन एंड पैरेंटल कण्ट्रोल अमंग कोरियाई एडोलैसैंट्स. चाइल्ड डेवलपमेंट, 56, 524-528.

रोम, ई., एंड मिकुलिनसर, एम. (2003), अटैचमेंट थ्योरी एंड ग्रुप प्रोसेसेजः द एसोसिएशन बिटवीन अटैचमेंट स्टाइल एंड ग्रुप रिलेटेड रेप्रेसेंटेशन्स, गोल्स, मेमोरीज एंड फंक्शनिंग. जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 84 (6), 1220-1235.

रोजिन, एच., एंड स्पीगेल, ए. (2017, 15 जून), द कल्चर इनसाइड (ऑडियो पॉडकास्ट).

रुमेल, आर. जे. (1988, जून), पोलिटिकल सिस्टम्स, वायलेंस एंड वॉर. पेपर प्रेजेंटेड एट यूनाइटेड स्टेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ पीस कॉन्फ्रेंस, एयरली हाउस, एयरली, वीए.

सगी, ए., एलिसूर, डी., एंड यामूची, एच. (1996). द स्ट्रक्चर एंड स्ट्रेंथ ऑफ अचीवमेंट मोटिवेशः अ क्रॉस.कल्चरल कम्परीजन. जर्नल ऑफ ऑर्गनाइजेशनल बिहेवियर, 17, (5), 431-444.

सलेम, आर. (2006). सिबलिंग कॉन्फिगरेशनः इम्पैक्ट ऑन एजुकेशन एंड हेल्थ आउटकम्स ऑफ एडोलैसैंट्स इन इजिप्ट. मादी, इजिप्टः जेंडर, फेमिली, एंड डेवलपमेंट प्रोग्राम, पापुलेशन कौंसिल, रीजनल ऑफिस फॉर वेस्ट एशिया एंड नार्थ अफ्रीका.

सांचेज, डी. टी. (2010), हाउ डू फोर्स्ड चॉइस डिलेमाज एफेक्ट मल्टीरेसिअल पीपल. द रोले ऑफ आइडेंटिटी ऑटोनोमी एंड पब्लिक रेगार्ड इन डिप्रेसिव सिम्पटम्स. जर्नल ऑफ एप्लाइड सोशल साइकोलॉजी, 40 (7), 1657-1677.

सांचेज, डी. टी., शिह, एम. ज., एंड विल्टन, एल. एस. (2014). एक्सप्लोरिंग द आइडेंटिटी ऑटोनोमी पर्सपेक्टिव (आई ए पी): एन इंटेग्रटीवे थ्योरेटिकल एप्रोच टू मल्टीकल्चरल एंड मल्टीरेसियल आइडेंटिटी. इन वी बेनेट.मार्टिनेज और वाई. वाई। होंग (ईडीएस), ऑक्सफोर्ड लाइब्रेरी ऑफ साइकोलॉजी. द ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ मल्टीकल्चरल आइडेंटिटी. (पीपी. 139-159),

शिह, एम., पिट्सिंस्की, टी. एल., एंड अंबाडी, एन. (1999). स्टीरियोटाइप ससेप्टिबिलिटीः आइडेंटिटी सेलिएन्स एंड षिफ्ट्स इन क्वांटिटेटिव परफॉरमेंस. साइकोलॉजिकल साइंस, 10, 80-83.

सिन्हा, डी. (1988). बेसिक इंडियन वैल्यूज एंड बिहेवियर डिस्पोजिशन्स इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ नेशनल डेवलपमेंट. इन डी. सिन्हा एंड एच. एस. आर. (इडीएस.), सोशल वैल्यूज एंड डेवलपमेंटः एशियन पर्सपेक्टिव. न्यू डेल्हीः सेज.

सिन्हा, जे. बी. पी., सिन्हा, टी. एन., वर्मा, जे., एंड सिन्हा, आर. बी. एन. (2001). कलेक्टिविज्म विद को एक्झिस्टिंग विद इंडिवीडुअलिस्मः एन इंडियन सिनेरिओ. एशियन जर्नल ऑफ सोशल साइकोलॉजी, 4 (2), 133-145.

स्मिथ, ई. आर., मर्फी, जे., एंड कोट, एस. (1999). अटैचमेंट टू ग्रुप्सः थ्योरी एंड मैनेजमेंट. जर्नल ऑफ पर्सनेलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 77, 94-110.

सोलिस.केमरा, पी., एंड फॉक्स, आर. ए. (1995). पेरेंटिंग अमंग मदर्स विद यंग चिल्ड्रन इन मेक्सिको एंड द यूनाइटेड स्टेट्स. जर्नल ऑफ सोशल साइकोलॉजी, 135 (5), 591-599.

स्टीवर्ट, एस. एम., बॉन्ड, एम. एच., जमान, आर. एम., मैकब्राइड.चांग, सी., राव, एन., हो, एल. एम., एंड फील्डिंग, आर. (1999). फंक्शनल पेरेंटिंग इन पाकिस्तान. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिहेवियरल डेवलपमेंट, 23 (3), 747-770.

सुह, ई. एम., एंड ओशि, एस. (2002). सब्जेक्टिव वेल.बीइंग अक्रॉस कल्चर्स. ऑनलाइन रीडिंग इन साइकोलॉजी एंड कल्चर, 10 (1).

ताजफेल, एच., बिलिग, एम. जी., बंडी, आर. पी., एंड फ्लेमेन्ट, सी. (1971). सोशल कटेगराइजेसन एंड इंटरग्रूप बिहेवियर. यूरोपियन जर्नल ऑफ सोशल साइकोलॉजी, 1 (2), 149-178.

ताजफेल, एच. (1978). द अचीवमेंट ऑफ इंटर.ग्रुप डिफ्रेंसिएशन. इन एच. ताजफेल (इडी.), डिफ्रेंसिएशन बिटवीन सोशल ग्रुप (पीपी 77-100), लंदनः अकेडमिक प्रेस.

टेरव, टी., एंड केल्टिकांगस, जे. एल. (1998). सोशल डिसिजन मेकिंग स्ट्रेटेजीज अमंग फिनिष एंड एस्टोनियन अडोलेसेंट्स. जर्नल ऑफ सोशल साइकोलॉजी, 138 (3), 381-391.

टिंग.टुमी, एस. (1991). इंटिमेसी एक्सप्रेशंस इन थ्री कल्चर्सः फ्रांस, जापान, एंड द यूनाइटेड स्टेट्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंटरकल्चरल रिलेशंस, 15, 29-46.

थॉर्नटन, बी. (1984).डिफेंसिव एट्रीब्यूशन ऑफ रिस्पांसिबिलिटीः एविडेंस फॉर एन अराउजल बेस्ड मोटिवेशनल बायस. जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 46, 721-734.

टाउनसेंड, एस. एस. एम., मार्कस, एच. आर., एंड बर्गसीकर, एच. बी. (2009). माई चॉइस, योर कटेगरीजः द डिनायल ऑफ मल्टीरेसियल आइडेन्टिटीज. जर्नल ऑफ सोशल इष्यूज, 65 (1), 185-204.

ट्रायंडिस, एच.सी. (1972). द एनालिसिस ऑफ सब्जेक्टिव कल्चर. न्यूयॉर्कः विली.

ट्रायंडिस, एच. सी., बोंटेम्पो, आर., विलारियल, एम. जे., असाई, एम., एंड लुक्का, एन. (1988). इंडिवीडुअलिस्म एंड कलेक्टिविज्मः क्रॉस-कल्चरल पर्सपेक्टिव्स ऑन सेल्फ. इनग्रुप रिलेशनशिप्स. जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 54 (2), 323-338.

टर्नर, आर. एन., एंड क्रिस्प, आर. जे. (2010). एक्सप्लेनिंग द रिलेशनशिप बिटवीन इनग्रुप आइडेंटिफिकेशन एंड इंटरग्रुप बायस फॉलोइंग रीकटेगराईजेसनः ए सेल्फ.रेगुलेशन थ्योरी एनालिसिस. ग्रुप प्रोसेसेस एंड इंटरग्रूप रिलेशन्स, 13 (2), 251-261.

त्रिपाठी, आर. सी. (1988). अलाइनिंग डेवलपमेंट टू वैल्यूज इन इंडिया. इन डी. सिन्हा एंड एच. एस. आर. काओ (ईडीएस), सोशल वैल्यूज एंड डेवलपमेंटः एशियन पर्सपेक्टिव्स. न्यू डेल्हीः सेज.

टर्नर, एच. (1975). रीअप्रैजल्स ऑफ फासिज्म. न्यू यॉर्कः न्यूव्यूपॉइंट्स.

वांडेलो, जे., एंड कोहेन, डी. (2002). कल्चरल थीम्स एसोसिएटेड विद डोमेस्टिक वायलेंस अगेंस्ट वीमेनः ए क्रॉस.कल्चरल एनालिसिस. मैनुस्क्रिप्ट सुबेटेड फॉर पब्लिकेशन.

वेरकुएंत, एम. (2009), सेल्फ.इस्टीम एंड मल्टी.कल्चरलिस्मः एन एग्जामिनेशन अमंग एथनिक माइनॉरिटी एंड मेजोरिटी ग्रुप्स इन द नीदरलैंड्स. जर्नल ऑफ रिसर्च इन पर्सनैलिटी, 43 (3), 419-427.

वेर्ले, के., एंड फेसबेंडर, यू. (2019), सेल्फ.कांसेप्ट. इन वी. जिगलर.हिल एंड टी. के. षल्क्फोर्ड (ईडीस), इनसाइक्लोपीडिया पर्सनालिटी एंड इंडिविजुअल डिफरेंसेस. एजीः स्प्रिंगर नेचर स्विट्जरलैंड.

व्हीलर, एल., रीस, एच. टी., एंड बॉन्ड, एम. एच. (1989). कलेक्टिविज्म एंड इंडिवीडुअलिस्म इन एवरीडे सोशल लाइफः डी मिडिल किंगडम एंड द मेल्टिंग पॉट. जर्नल ऑफ पर्सनेलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 57 (1), 79-86.

वायली, एस. एंड डको, के. (2010). द बाईकल्चरल आइडेंटिटी परफॉरमेंस ऑफ इमिग्रेंट्स. इन ए. ई. अजी, एक्स. क्रिस्चोचो, बी. कलैंडर्मन्स एंड बी. साइमन (ईडीएस), आइडेंटिटी एंड पार्टिसिपेशन (पृ. 49-68). ऑक्सफोर्डः वायली,ब्लैकवेल.

ये, डी., एनजी, वाई. के., एंड लियान, वाई. (2014). कल्चर एंड हैप्पीनेस. सोशल इंडीकेटर्स रिसर्च, 123 (2), 519-547.

यूनिस, जे., एंड स्मॉलर, जे. (1989). एडोलैसैंट्स इंटरपर्सनल रिलेशनशिप्स इन सोशल कॉन्टेक्ट्स. इन टी. जे. बैंड्ट एंड जी. डब्ल्यू. लड्ड (ईडीएस), पीयर रिलेशनशिप्स इन चाइल्ड डेवलपमेंट (पृ. 3003-16), न्यूयॉर्कः वायली.

जुको-गोल्ड्रिंग, पी. (1995). सिबलिंग इंटरेक्शन अक्रॉस कल्चर्स.न्यू यॉर्कः स्प्रिंगर-वर्लग.

MPDD/IGNOU/P.O. 8K/JANUARY 2020 (Reprint)